INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RSSB – LDC

लिपिक ग्रेड – II एवं कनिष्ठ

भाग – 4

इतिहास एवं संस्कृति (राजस्थान)

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स ***"RSSB LDC (लिपिक ग्रेड-II एवं कनिष्ठ सहायक)"*** *को एक विभिन्न अपने - अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है। ये नोट्स पाठकों को* ***राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड (RSSB)*** *द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा* ***"LDC (लिपिक ग्रेड-II एवं कनिष्ठ सहायक)"*** *में पूर्ण संभव मदद करेंगे।*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स मे कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है। अतः आप सूची पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : https://www.infusionnotes.com

WhatsApp - https://wa.link/lrn74q

Online Order - http://surl.li/rbhbb

मूल्य : (₹)	संस्करण : नवीनतम

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	राजस्थान का इतिहास	
1.	राजस्थान इतिहास के स्रोत	1
2.	प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासक	22
3.	मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक तथा राजस्व व्यवस्था	89
4.	आधुनिक राजस्थान	100
5.	राजस्थान में राजनैतिक जागरण	114
6.	राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन	119
7.	विभिन्न देशी रियासतों में प्रजामण्डल आंदोलन	129
8.	राजस्थान का एकीकरण	141
	कला संस्कृति	
1.	राजस्थानी साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियाँ एवं क्षेत्रीय बोलियाँ	147
2.	मेले एवं त्यौहार	158
3.	लोक संगीत एवं लोक नृत्य	170
4.	राजस्थानी संस्कृति, परम्परा एवं विरासत	190
5.	वेशभूषा एवं आभूषण	195
6.	राजस्थान के धार्मिक आंदोलन	198
7.	लोक देवियाँ एवं लोक देवता	206
8.	स्थापत्य कला की प्रमुख विशेषताएं	216

राजस्थान का इतिहास

अध्याय – I

राजस्थान इतिहास के स्रोत

परिचय –

सामान्यतः इतिहासकारों द्वारा अतीत की घटनाओं का गहन अध्ययन करके मानवीय विकास और प्रवृत्तियों को समझना ही इतिहास है। इतिहास का जनक **हेरोडोटस** को कहा जाता है।

हेरोडोटस (मृत्यु 425 ई.पू.): ये यूनान के प्रथम इतिहासकार एवं भूगोलवेत्ता थे। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक **'हिस्टोरिका'** में पेलोपोनेसियन युद्ध को विषय बनाया था।

इतिहास का वर्गीकरण

इतिहास के अध्ययन को साक्ष्यों के आधार पर तीन मुख्य भागों में विभाजित किया जाता है:

1. **प्रागैतिहासिक काल (Pre-historic Period):** यह वह काल है जिसका कोई लिखित विवरण उपलब्ध नहीं है। इसमें मानव की उत्पत्ति और पत्थर के औजारों के युग (पाषाण काल) को सम्मिलित किया जाता है। मानव सभ्यता का उदय इसी काल से माना जाता है।
2. **आद्य ऐतिहासिक काल (Proto-historic Period):** इस काल के लिखित साक्ष्य तो मिले हैं, लेकिन उन्हें अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है।
   - **उदाहरण:** सिंधु घाटी सभ्यता। इसकी लिपि को आज तक नहीं पढ़ा जा सका है।
   - **लिपि की विशेषताएँ:** इस लिपि को 'सर्पिलाकार लिपि', 'गोमूत्र लिपि' या **'बूस्ट्रोफेदन' (Boustrophedon)** कहा जाता है, क्योंकि यह दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी।
   - **सभ्यताएँ:** मेसोपोटामिया (ईरान-इराक) की सभ्यता इसी काल की है। राजस्थान के संदर्भ में **कालीबंगा सभ्यता** इसी काल का प्रमुख उदाहरण है।
3. **ऐतिहासिक काल (Historical Period):** वह काल जिसके लिखित स्रोत उपलब्ध हैं और उन्हें स्पष्ट रूप से पढ़ा भी जा चुका है।
   - **उदाहरण:** वैदिक काल, जिसमें वेदों की रचना हुई। इस काल से निरंतर लिखित इतिहास प्राप्त होता है।

प्राचीन इतिहास के स्रोत

इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए मुख्य रूप से दो प्रकार के स्रोत उत्तरदायी होते हैं:

- **पुरातात्विक स्रोत:** अभिलेख, सिक्के, स्मारक, मूर्तियाँ और उत्खनन से प्राप्त अवशेष।
- **साहित्यिक स्रोत:** धार्मिक ग्रंथ, ऐतिहासिक पुस्तकें, विदेशी यात्रियों के वृत्तांत और क्षेत्रीय साहित्य।

राजस्थान इतिहास को जानने के स्रोत

इतिहास का शाब्दिक अर्थ है – **"ऐसा निश्चित रूप से हुआ है"**। इतिहास के जनक यूनान के **हेरोडोटस** को माना जाता है। लगभग 2500 वर्ष पूर्व उन्होंने **"हिस्टोरिका"** नामक ग्रंथ की रचना की, जिसमें उन्होंने भारत का उल्लेख भी किया है।

भारतीय इतिहास के जनक **मेगस्थनीज** माने जाते हैं। महाभारत के लेखक **वेदव्यास** हैं और महाभारत का प्राचीन नाम **"जय संहिता"** था।

राजस्थान इतिहास के जनक: कर्नल जेम्स टॉड

- राजस्थान इतिहास के जनक **कर्नल जेम्स टॉड** कहे जाते हैं।
- वे 1818 से 1821 के मध्य मेवाड़ (उदयपुर) प्रांत के पॉलिटिकल एजेंट थे।
- उन्होंने घोड़े पर घूम-घूम कर राजस्थान के इतिहास का संकलन किया, अतः उन्हें **"घोड़े वाले बाबा"** कहा जाता है।
- उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक **"एनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान"** का प्रकाशन 1829 में लंदन से करवाया। इस पुस्तक का दूसरा नाम **"सेंट्रल एंड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया"** है।
- **गौरीशंकर हीराचंद ओझा (जी.एच. ओझा)** ने इस पुस्तक का सर्वप्रथम हिंदी में अनुवाद करवाया।
- कर्नल टॉड की मृत्यु के बाद उनकी पत्नी ने 1837 में उनकी दूसरी पुस्तक **"ट्रैवल्स इन वेस्टर्न इंडिया"** का प्रकाशन करवाया।

अभिलेख एवं प्रशस्तियाँ

पत्थर, धातु या अन्य कठोर सतहों पर उकेरे गए लेखों को **अभिलेख** कहा जाता है। इनमें शिलालेख, स्तंभ लेख, मूर्ति लेख और गुहा लेख सम्मिलित हैं। तिथि युक्त एवं समसामयिक होने के कारण पुरातात्विक स्रोतों में अभिलेख सर्वाधिक महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

- **अध्ययन:** अभिलेखों के अध्ययन को **एपिग्राफी (Epigraphy)** कहा जाता है।
- **भाषा एवं लिपि:** * भारत में प्राचीनतम अभिलेख सम्राट **अशोक मौर्य** के हैं, जिनकी भाषा प्राकृत एवं मगधी तथा लिपि ब्राह्मी है।
  - शक शासक रुद्रदामन का **जूनागढ़ अभिलेख** भारत का पहला संस्कृत अभिलेख है।
  - राजस्थान के अभिलेखों की मुख्य भाषा संस्कृत एवं राजस्थानी है तथा लिपि **महाजनी एवं हर्ष लिपि** है।
  - फारसी भाषा में लिखा सबसे पुराना लेख अजमेर के **अढ़ाई दिन के झोंपड़े** की दीवार के पीछे मिला है (लगभग 1200 ईस्वी)।

अशोक के अभिलेख

- **भाब्रू एवं बैराठ अभिलेख:** मौर्य सम्राट अशोक के दो अभिलेख, भाब्रू अभिलेख तथा बैराठ अभिलेख, बैराठ की

पहाड़ियों (वर्तमान कोटपूतली-बहरोड़ जिला) से प्राप्त हुए हैं।

- **खोज:** भाब्रू शिलालेख की खोज **कैप्टन बर्ट** द्वारा 1837 ई. में **बीजक की पहाड़ी** से की गई थी।
- **महत्व:** इस अभिलेख से अशोक के बौद्ध धर्म के अनुयायी होने (बुद्ध, धम्म और संघ के प्रति आस्था) तथा राजस्थान में मौर्य शासन के विस्तार की महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है।
- **वर्तमान स्थिति:** अशोक का यह भाब्रू शिलालेख वर्तमान में **एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल (कोलकाता संग्रहालय)** में सुरक्षित है।

बड़ली का अभिलेख

- **ऐतिहासिक महत्व:** यह राजस्थान का **सबसे प्राचीनतम अभिलेख** है।
- **प्राप्ति एवं तिथि:** 443 ई. पूर्व का यह अभिलेख अजमेर जिले के बड़ली गाँव के **भिलोत माता मंदिर** से पंडित गौरीशंकर हीराचंद ओझा को प्राप्त हुआ था।
- **वर्तमान स्थिति:** वर्तमान में यह अभिलेख **अजमेर संग्रहालय** में सुरक्षित है।

बसंतगढ़ अभिलेख (625 ई.)

- **प्राप्ति:** यह अभिलेख बसंतगढ़ (सिरोही) के क्षेमकरी माता मंदिर से प्राप्त हुआ है, जो चावड़ा वंश के राजा वर्मलात के समय का है।
- **विवरण:** इससे अर्बुदांचल (आबू) के शासक राज्यिल और उनके पुत्र सत्यदेव के बारे में जानकारी मिलती है।
- **लेखक एवं उत्कीर्णकर्ता:** इस अभिलेख के लेखक 'द्विजन्मा' तथा उत्कीर्णकर्ता 'नागमुण्डी' थे।
- **महत्व:** दधिमती माता अभिलेख के बाद यह पश्चिमी राजस्थान का दूसरा सबसे प्राचीन अभिलेख माना जाता है। इसमें राजस्थान के लिए **'राजस्थानीयादित्य'** शब्द का प्रयोग मिलता है।
- **सामंत प्रथा:** इस अभिलेख में सामंती व्यवस्था (सामंत प्रथा) के प्रचलन का उल्लेख मिलता है।
- इस अभिलेख में मुख्य रूप से चावड़ा वंश के शासकों का वर्णन है।

मानमोरी का अभिलेख (713 ई.)

- **प्राप्ति:** यह अभिलेख मानसरोवर झील (चित्तौड़गढ़) के तट से प्राप्त हुआ था।
- **रचयिता एवं उत्कीर्णकर्ता:** इसके रचयिता 'पुष्य' तथा उत्कीर्णकर्ता 'शिवादित्य' थे।
- **चित्तौड़गढ़ दुर्ग:** इस अभिलेख से चित्तौड़गढ़ दुर्ग के निर्माता 'चित्रांगद मौर्य (चित्रांग) के बारे में जानकारी मिलती है।
- **मानसरोवर झील:** इसमें राजा भोज के पुत्र 'मान' द्वारा मानसरोवर झील का निर्माण करवाए जाने का उल्लेख है।
- **कर्नल टॉड का वृत्तांत:** कर्नल जेम्स टॉड इस भारी शिलालेख को अपने साथ इंग्लैंड ले जा रहे थे, लेकिन संतुलन बिगड़ने के कारण उन्होंने इसे समुद्र में फेंक दिया था। टॉड ने अपनी पुस्तक में इसका अनुवाद प्रकाशित किया है।
- **पौराणिक संदर्भ:** इस अभिलेख में 'अमृत मंथन' की कथा का उल्लेख मिलता है।
- **मौर्य वंश:** इसमें चार मौर्य शासकों— **महेश्वर, भीम, भोज और मान** के नामों का विवरण मिलता है।

मण्डौर अभिलेख (837 ई.)

- **विवरण:** जोधपुर के मण्डौर में स्थित इस अभिलेख से **गुर्जर-प्रतिहार** शासकों की वंशावली की जानकारी मिलती है।
- **धार्मिक महत्व:** इसमें विष्णु तथा शिव पूजा (शैव और वैष्णव धर्म) का उल्लेख किया गया है।
- **शासक:** इस अभिलेख की रचना गुर्जर-प्रतिहार शासक **बाउक** द्वारा करवाई गई थी।

प्रतापगढ़ अभिलेख (946 ई.)

- **विवरण:** प्रतापगढ़ से प्राप्त इस अभिलेख में गुर्जर-प्रतिहार शासक **महेन्द्रपाल** की उपलब्धियों और सैन्य विजयों का वर्णन किया गया है।
- **भाषा:** यह संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण है और तत्कालीन कर व्यवस्था की भी जानकारी देता है।

बड़वा अभिलेख (238-239 ई.)

- **ऐतिहासिक महत्व:** यह बड़वा (अन्ता तहसील, बारां जिला) में स्तंभों पर उत्कीर्ण **मौखरी वंश** के शासकों का सबसे प्राचीन और महत्वपूर्ण अभिलेख है।
- **विषय:** संस्कृत भाषा में लिखित इस अभिलेख से मौखरी शासक **बल, सोमदेव और बलसिंह** की उपलब्धियों तथा उनके द्वारा किए गए यज्ञों की जानकारी प्राप्त होती है।
- **यूप स्तंभ:** यह **3 यूप स्तंभों** पर खुदा हुआ है, जो तत्कालीन समय में यज्ञ अनुष्ठानों की प्रधानता को दर्शाता है।

कणसवा का अभिलेख (738 ई.)

- **विवरण:** यह अभिलेख कोटा के निकट कणसवा गाँव के शिवालय से प्राप्त हुआ है।
- **महत्व:** इसमें मौर्य वंश के राजा **धवल** का उल्लेख मिलता है।
- **ऐतिहासिक तथ्य:** राजा धवल को राजस्थान का **अंतिम मौर्य वंशी राजा** माना जाता है। इसके बाद राजस्थान में मौर्यों का प्रभाव समाप्त हो गया था।

आदिवराह मंदिर का अभिलेख (944 ई.)

- **विवरण:** यह लेख उदयपुर के आहड़ स्थित आदिवराह मंदिर से प्राप्त हुआ है।
- **भाषा एवं लिपि:** यह संस्कृत भाषा और **कुटिल (ब्राह्मी)** लिपि में उत्कीर्ण है।
- **शासक:** यह लेख मेवाड़ के गुहिल शासक **भर्तृपट्ट द्वितीय** (भर्तृहरि द्वितीय) के समय का है।

चौहान वंश का इतिहास

अजमेर के चौहान

चौहान राजवंश ने राजस्थान के इतिहास में अपनी वीरता और स्थापत्य कला के लिए एक विशिष्ट स्थान बनाया है। इस वंश की यात्रा सपादलक्ष से शुरू होकर अजमेर के गौरव तक पहुँचती है।

1. वासुदेव चौहान (चौहानों के आदि पुरुष)

- **स्थापना:** वासुदेव ने **551 ई.** के आसपास चौहान वंश की नींव डाली।
- **क्षेत्र:** शाकम्भरी (सांभर) का प्राचीन नाम **सपादलक्ष** था, जिसका अर्थ है 'सवा लाख गाँवों का समूह'।
- **राजधानी:** इन्होंने **शाकम्भरी/सांभर** को अपनी प्रथम राजधानी बनाया।
- **निर्माण:** ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार, सांभर झील का निर्माण भी वासुदेव चौहान ने ही करवाया था।

2. पृथ्वीराज प्रथम

- **स्वतंत्रता:** इन्हें चौहान वंश का **प्रथम स्वतंत्र शासक** माना जाता है।
- **विस्तार:** इन्होंने गुजरात के भड़ौच (भृगुकच्छ) तक अपना प्रभाव बढ़ाया।
- **स्थापत्य:** भड़ौच में अपनी कुलदेवी **आशापूर्णा माता** के भव्य मंदिर का निर्माण करवाया।

3. अजयराज प्रथम (1113 ई.)

- **नगर स्थापना:** इन्होंने 1113 ई. में पहाड़ियों के मध्य **अजमेरु (अजमेर)** नगर बसाया।
- **राजधानी:** अजमेर को चौहान साम्राज्य की नई राजधानी बनाया।
- **तारागढ़ दुर्ग:** इन्होंने बीठली पहाड़ी पर **अजमेर दुर्ग** का निर्माण करवाया।
  - **विशेष:** 15वीं शताब्दी में मेवाड़ के कुंवर पृथ्वीराज सिसोदिया ने अपनी पत्नी तारा के नाम पर इसका नाम **तारागढ़** रखा। इस दुर्ग को 'पूर्व का जिब्राल्टर' (विशप हेबर के अनुसार) और 'राजपूताना की कुंजी' भी कहा जाता है।

4. अर्णोराज (आनाजी) (1133-1155 ई.)

अजयराज के पुत्र अर्णोराज एक प्रतापी शासक और कला प्रेमी थे।

- **आनासागर झील (1137 ई.):** तुर्कों के आक्रमण के बाद रक्ताश्रम भूमि को साफ करने और जल की आपूर्ति हेतु अजमेर में **आनासागर झील** का निर्माण करवाया।
- **वराह मंदिर:** पुष्कर (अजमेर) में भगवान विष्णु के **वराह मंदिर** का निर्माण करवाया।
- **संघर्ष:** इन्हें गुजरात के चालुक्य शासक **कुमारपाल** ने आबू के निकट युद्ध में पराजित किया था।
- **अंत:** अर्णोराज की हत्या उनके अपने पुत्र **जगदेव** ने कर दी थी। इसी कारण जगदेव को चौहान वंश का **'पितृहन्ता'** कहा जाता है।

विग्रहराज चतुर्थ (बीसलदेव) (1153-1164 ई.)

विग्रहराज चतुर्थ अजमेर के चौहान वंश के सबसे प्रतापी शासक थे। उनका शासनकाल न केवल सैन्य विजयों के लिए, बल्कि साहित्य और कला की उन्नति के लिए भी जाना जाता है।

- **चौहान वंश का स्वर्णकाल:** इनके काल को अजमेर के चौहानों का **'स्वर्ण युग'** माना जाता है। इन्होंने दिल्ली के तंवर शासकों को पराजित कर दिल्ली पर अधिकार किया था।
- **कविबांधव की उपाधि:** साहित्य के प्रति अगाध प्रेम और कवियों को संरक्षण देने के कारण इन्हें **'कविबांधव'** (कवियों का भाई/मित्र) कहा जाता है।
- **साहित्यिक रचनाएँ:**
  - इन्होंने स्वयं **'हरिकेलि'** नामक संस्कृत नाटक की रचना की। इस नाटक का कथानक भगवान शिव-पार्वती और कुमार कार्तिकेय पर आधारित है (इसमें मुख्य रूप से अर्जुन और शिव के मध्य संवाद का वर्णन है)।
  - हरिकेलि नाटक की कुछ पंक्तियाँ आज भी अजमेर के अढ़ाई दिन के झोपड़े और इंग्लैंड में राजा राममोहन राय के स्मारक पर अंकित हैं।
- **दरबारी विद्वान:**
  - **सोमदेव:** इन्होंने **'ललित विग्रहराज'** नामक प्रसिद्ध ग्रंथ की रचना की।
  - **नरपति नाल्ह:** इन्होंने **'बीसलदेव रासो'** की रचना की, जो राजस्थानी साहित्य की एक महत्वपूर्ण कृति है।
- **स्थापत्य कला और निर्माण:**
  - **संस्कृत पाठशाला:** 1153-1156 ई. के मध्य अजमेर में एक भव्य संस्कृत विद्यालय (सरस्वती कंठाभरण) का निर्माण करवाया। 1200 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने इसे तुड़वाकर **'अढ़ाई दिन का झोपड़ा'** नामक मस्जिद में बदल दिया।
  - **बीसलसागर:** इन्होंने टोंक के पास बीसलपुर (वर्तमान बीसलपुर बाँध का स्थान) में **बीसलसागर तालाब** का निर्माण करवाया।
- **विद्वानों की राय:**
  - प्रसिद्ध इतिहासकार **किलहॉर्न** ने विग्रहराज के बारे में लिखा है: "वह उन हिंदू शासकों में से एक था जो कालिदास और भवभूति की होड़ (बराबरी) कर सकता था।"

पृथ्वीराज तृतीय (पृथ्वीराज चौहान) (1177–1192 ई.)

पृथ्वीराज चौहान तृतीय अजमेर के चौहान वंश के अंतिम और सबसे महान प्रतापी शासक थे। उन्होंने दिल्ली और अजमेर दोनों राजधानियों से उत्तर भारत पर शासन किया।

व्यक्तिगत परिचय

- **जन्म एवं राज्याभिषेक:** इनका जन्म 1166 ई. में हुआ और मात्र **11 वर्ष** की अल्पायु (1177 ई.) में ये शासक बने।

- **अभिभावकः** कम उम्र होने के कारण शासन की प्रारंभिक बागडोर इनकी माता **कर्पूरी देवी** ने संभाली।
- **प्रमुख सहायकः** प्रधानमंत्री **कैमास (कदंबदास)** और सेनापति भुवनमल्ल।
- **घोड़े का नामः** नाट्यरंभा।
- **पुत्रः** गोविंदराज चौहान (जिन्होंने बाद में रणथंभौर में चौहान वंश की स्थापना की)।

प्रमुख उपाधियाँ

1. **राय पिथौराः** (पिथौरागढ़ किला बनाने के कारण)।
2. **दल पंगुलः** जिसका अर्थ है **'विश्व विजेता'**।

प्रारंभिक विजय एवं संघर्ष

- **नागार्जुन व भंडानकों का दमनः** शासक बनते ही उन्होंने अपने चचेरे भाई नागार्जुन के विद्रोह को कुचला और सतलज क्षेत्र की भंडानक जाति का पूरी तरह दमन किया।
- **महोबा/तुमुल का युद्ध (1182 ई.):** पृथ्वीराज ने चंदेल शासक **परमर्दी देव** को पराजित किया। इस युद्ध में चंदेलों के वीर सेनापति **आल्हा और उदल** वीरतापूर्वक लड़ते हुए शहीद हुए।
- **कन्नौज से विवादः** पृथ्वीराज कन्नौज के राजा **जयचंद गहड़वाल** की पुत्री **संयोगिता** का अपहरण (स्वयंवर से) कर ले आए थे। इस घटना ने जयचंद को पृथ्वीराज का कट्टर शत्रु बना दिया।

तराइन के ऐतिहासिक युद्ध (1191 - 1192 ई.)

पृथ्वीराज चौहान तृतीय और मोहम्मद गौरी के बीच तराइन के मैदान (वर्तमान करनाल, हरियाणा) में लड़े गए दो युद्धों ने भारत के इतिहास की दिशा बदल दी।

तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ई.)

- **प्रतिद्वंद्वीः** पृथ्वीराज चौहान तृतीय बनाम मोहम्मद गौरी।
- **स्थानः** तराइन का मैदान (हरियाणा)।
- **युद्ध की घटनाः** इस युद्ध में राजपूत सेना ने गौरी की सेना पर भीषण प्रहार किया। दिल्ली के शासक **गोविंदराज तोमर** ने अपने भाले (या तीर) के प्रहार से मोहम्मद गौरी को गंभीर रूप से घायल कर दिया।
- **परिणामः** मोहम्मद गौरी घायल होकर रणभूमि से भाग निकला और वापस गजनी चला गया। इस युद्ध में **पृथ्वीराज चौहान की निर्णायक विजय** हुई।

तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.)

- **पृष्ठभूमिः** अपनी हार का बदला लेने के लिए मोहम्मद गौरी एक वर्ष बाद विशाल सेना और नई रणनीति के साथ वापस आया।
- **विवाद का प्रभावः** पृथ्वीराज के ससुर और कन्नौज के राजा **जयचंद गहड़वाल** ने अपनी पुत्री **संयोगिता** के हरण के कारण पृथ्वीराज से दुश्मनी निभाई और इस युद्ध में **मोहम्मद गौरी की सहायता** की।
- **युद्ध की घटनाः** गौरी ने कूटनीति का सहारा लेकर राजपूतों पर अचानक आक्रमण किया। राजपूत वीरता से लड़े लेकिन अंततः उनकी पराजय हुई।
- **परिणामः** इस युद्ध में **मोहम्मद गौरी की विजय** हुई।
- **ऐतिहासिक महत्वः** इस जीत के साथ ही भारत में मुस्लिम सत्ता की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ और अजमेर व दिल्ली पर चौहानों का शासन समाप्त हो गया।

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक योगदान

पृथ्वीराज के दरबार में अनेक महान विद्वान थे, जिन्होंने उनके गौरव का बखान किया:

- **चंद्रबरदाईः** पृथ्वीराज के अभिन्न मित्र और दरबारी कवि, जिन्होंने **'पृथ्वीराज रासो'** (हिंदी का प्रथम महाकाव्य) लिखा।
- **जयानकः** इन्होंने संस्कृत ग्रंथ **'पृथ्वीराज विजय'** की रचना की।
- **अन्य विद्वानः** वागीश्वर, विद्यापति गौड़, जनार्दन, आशाधर और विश्वरूप।
- **धार्मिक घटनाः** प्रसिद्ध सूफी संत **ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती** पृथ्वीराज चौहान के शासनकाल में ही अजमेर आए थे।

रणथम्भौर के चौहान

हम्मीर देव चौहान (1282-1301 ई.)

हम्मीर देव चौहान रणथम्भौर के चौहान वंश के अंतिम, सर्वाधिक प्रतापी और शक्तिशाली शासक थे। उन्हें उनके 'हठ' और शरणागत की रक्षा के लिए भारतीय इतिहास में अमर स्थान प्राप्त है।

राज्यारोहण और योग्यता

- **चयनः** हम्मीर अपने पिता **जैत्रसिंह** के तीसरे पुत्र थे। उनकी असाधारण योग्यता और वीरता को देखते हुए जैत्रसिंह ने अपने जीवित रहते ही **1282 ई.** में उनका राज्याभिषेक कर दिया था।
- **जैत्रसिंह का शासनः** जैत्रसिंह ने रणथम्भौर पर 32 वर्षों तक शासन किया था, जिनकी याद में हम्मीर ने दुर्ग में **32 खंभों की छतरी** (न्याय की छतरी) बनवाई।

ऐतिहासिक स्रोत

हम्मीर के गौरवशाली इतिहास की जानकारी हमें निम्नलिखित ग्रंथों से मिलती है:

- **नयनचंद्र सूरीः** हम्मीर महाकाव्य
- **चंद्रशेखरः** सुर्जन चरित्र एवं हम्मीर हठ
- **जोधराजः** हम्मीर रासो
- **अमीर खुसरोः** खजाइन-उल-फुतूह
- **जियाउद्दीन बरनीः** तारीख-ए-फिरोजशाही

हम्मीर की विजयें एवं प्रतिष्ठा

- **दिग्विजय की नीतिः** गद्दी पर बैठते ही हम्मीर ने अपनी सीमाओं के विस्तार के लिए 'दिग्विजय' का अभियान चलाया।
- **मेवाड़ पर विजयः** हम्मीर ने मेवाड़ के शासक **समरसिंह** को युद्ध में पराजित किया, जिससे पूरे राजस्थान में उनकी शक्ति का लोहा माना जाने लगा।

मारवाड़ का इतिहास

मारवाड़ का राठौड़ वंश: एक परिचय

राजस्थान के उत्तर-पश्चिमी भाग, जिसे ऐतिहासिक रूप से **मारवाड़** कहा जाता है, पर शासन करने वाला सबसे प्रमुख राजपूत वंश **राठौड़ वंश** है।

ऐतिहासिक परिवर्तन

- **प्रतिहारों का शासन:** राठौड़ों से पूर्व मारवाड़ क्षेत्र पर **गुर्जर-प्रतिहार** वंश का आधिपत्य था। कालांतर में प्रतिहार अपनी शक्ति का केंद्र बदलकर **कन्नौज** (उत्तर प्रदेश) ले गए।
- **राठौड़ सत्ता का उदय:** प्रतिहारों के कन्नौज विस्थापन के बाद इस क्षेत्र में राठौड़ वंश की स्थापना हुई। कन्नौज से आए **राव सीहा** को मारवाड़ के राठौड़ वंश का संस्थापक माना जाता है।

भौगोलिक एवं सामरिक महत्व

- **मारवाड़ का क्षेत्र:** इसमें मुख्य रूप से वर्तमान जोधपुर, पाली, बाड़मेर, बालोतरा, जालौर और नागौर के क्षेत्र सम्मिलित थे।
- **संकटकालीन राजधानी (सिवाना दुर्ग):** मारवाड़ के राठौड़ शासकों के लिए बालोतरा जिले में स्थित **सिवाना दुर्ग** 'संकटकालीन राजधानी' या 'शरणस्थली' के रूप में प्रसिद्ध था। जब भी मारवाड़ की मुख्य राजधानी (मंडोर या जोधपुर) पर बाहरी आक्रमण होता था, तो यहाँ के शासक सुरक्षा के लिए सिवाना दुर्ग का उपयोग करते थे।

शाखा	स्थापना	संस्थापक
1. मारवाड़ (जोधपुर)	1240 ई.	राव सीहा
2. बीकानेर	1465 ई.	राव बीका
3. किशनगढ़	1609 ई.	किशनसिंह

मारवाड़ के राठौड़ वंश का इतिहास अदम्य साहस और राजनैतिक संघर्ष की एक गौरवशाली गाथा है। इसकी शुरुआत कन्नौज के पतन के बाद राजस्थान के रेगिस्तानी भू-भाग में हुई।

राठौड़ वंश की उत्पत्ति के विभिन्न मत

राठौड़ वंश की उत्पत्ति को लेकर इतिहासकारों और प्राचीन ग्रंथों में मतभेद हैं:

स्रोत/विद्वान	उत्पत्ति का मत
शब्द व्युत्पत्ति	'राष्ट्रकूट' शब्द से राठौड़ शब्द बना है।
नैणसी, दयालदास, टॉड, पृथ्वीराजरासो	कन्नौज के राजा **जयचन्द गहड़वाल** के वंशज मानते हैं।
राठौड़ वंश महाकाव्य	भगवान शिव के मस्तक पर स्थित **चन्द्रमा** से उत्पत्ति बताई गई है।
डॉ. हार्नली एवं डॉ. ओझा	इन्होंने राठौड़ों को गहड़वालों से भिन्न माना है।
डॉ. जी. एच. ओझा (G.H. Ojha)	मारवाड़ के राठौड़ों को **बदायूँ के राठौड़ों** का वंशज माना है।

संस्थापक: राव सीहा (1240 – 1273 ई.)

राव सीहा मारवाड़ में स्वतंत्र राठौड़ राज्य के **आदि पुरुष** और **संस्थापक** थे। वे कन्नौज के शासक सेतराम जी के सबसे बड़े पुत्र थे।

मारवाड़ आगमन और पाली विजय:

- **पुष्कर यात्रा:** सं. 1268 (लगभग 1240 ई.) में राव सीहा तीर्थ यात्रा के लिए पुष्कर आए थे।
- **पालीवाल ब्राह्मणों की सहायता:** उस समय पाली क्षेत्र के पालीवाल ब्राह्मण मीणों और मेरों के अत्याचारों से त्रस्त थे। उनके मुखिया **जसोधर** के अनुरोध पर राव सीहा ने अपने भाइयों और फलौदी के जगमाल की सहायता से लुटेरों का दमन किया और पाली में शांति स्थापित की।
- **भीनमाल विजय:** पाली के बाद उन्होंने भीनमाल के स्थानीय शासक के अत्याचारों से जनता को मुक्त कराया और वहाँ अपनी धाक जमाई।

साम्राज्य विस्तार और खेड़:

- राव सीहा ने **खेड़** (बाड़मेर के पास) पर आक्रमण कर उसे जीता और अपनी सत्ता का केंद्र बनाया।

वीरगति और बिठू का लेख:

- **शाही सेना से संघर्ष:** जब शाही सेना ने पाली पर हमला किया, तब 80 वर्ष की आयु में राव सीहा ने पाली से 18 किमी दूर **बिठू गाँव** में मोर्चा संभाला।
- **स्वर्गवास:** वि. सं. 1330 (1273 ई.) कार्तिक कृष्ण द्वादशी को वे वीरगति को प्राप्त हुए। बिठू गाँव में उनका स्मारक बना है। उनकी रानी **पार्वती सोलंकी** उनके साथ सती हुईं।
- राव सीहा के बाद उनके पुत्र **आसनाथ जी** मारवाड़ के शासक बने।

राव सीहा के प्रमुख उत्तराधिकारी

मारवाड़ के राठौड़ साम्राज्य को सुदृढ़ करने में निम्न शासकों का क्रमबद्ध योगदान रहा:

- **राव धुहड़ जी:** ये कर्नाटक से अपनी कुलदेवी **चक्रेश्वरी (नागणेची माता)** की मूर्ति लाए और नागाणा गाँव में स्थापित की।
- **राव चूँड़ा जी:** इन्होंने मंडोर को अपनी स्थायी राजधानी बनाया।
- **राव जोधा:** जोधपुर नगर के संस्थापक और मेहरानगढ़ दुर्ग के निर्माता।
- **राव मालदेव:** मारवाड़ के सबसे प्रतापी शासक (हसमत वाला राजा)।
- **अन्य वीर:** राव बीका (बीकानेर के संस्थापक), राव दूदा (मेड़ता), वीर दुर्गादास राठौड़ और अमर सिंह राठौड़।

राव आसनाथ (1273 – 1291 ई.)

- **केंद्र:** सीहा के बाद शासक बने आसनाथ ने **गूँदोच** को अपना केंद्र बनाया।
- **वीरगति:** 1291 ई. में सुल्तान **जलालुद्दीन खिलजी** के आक्रमण के समय पाली की रक्षा करते हुए वे वीरगति को प्राप्त हुए।
- **सांस्कृतिक व धार्मिक महत्त्व:** * उनके पुत्र **धूहड़** ने राठौड़ों की कुलदेवी **चक्रेश्वरी (नागणेची माता)** की मूर्ति कर्नाटक से लाकर **नगाणा गाँव (बाड़मेर)** में स्थापित करवाई।
  - आसनाथ के छोटे भाई **धांधल** थे, जो प्रसिद्ध लोक देवता **पाबू जी** के पिता थे।

रावल मल्लिनाथ (लोक देवता)

- **राजधानी:** इन्होंने **'मेवानगर' (नाकोड़ा, बालोतरा)** को अपनी राजधानी बनाया।
- **मालाणी:** इन्हीं के नाम पर मारवाड़ के बाड़मेर-बालोतरा क्षेत्र को **'मालाणी'** कहा जाता है।
- **उत्तराधिकार:** इन्होंने अपने पुत्र जगमाल के स्थान पर अपने भाई **वीरम** को राजा बनाया।

राव चूँडा (1383 – 1423 ई.)

राव चूँडा को राठौड़ वंश का प्रथम महत्वपूर्ण शासक माना जाता है, जिन्होंने मारवाड़ में सामंती व्यवस्था की नींव रखी।

- **मंडौर विजय:** इन्होंने इन्दा प्रतिहारों की पुत्री **किशोर कुंवरी** से विवाह किया। इन्दा प्रतिहारों ने प्रसन्न होकर **मंडौर दुर्ग** उन्हें दहेज में दे दिया। चूँडा ने मंडौर को अपनी राजधानी बनाया।
- **सामंत प्रथा:** इन्दा प्रतिहारों को अपना सहयोगी बनाकर इन्होंने मारवाड़ में **सामंत प्रथा** की शुरुआत की।
- **विस्तार:** इन्होंने नागौर के जलाल खाँ खोखर को पराजित कर नागौर जीता और डीडवाना-कुचामन में **चूण्डासर** कस्बा बसाया।
- **निर्माण:** उनकी रानी चाँद कँवर ने जोधपुर में **चाँद बावड़ी** का निर्माण करवाया।
- **मृत्यु:** 1423 ई. में भाटियों और सांखलाओं के विरुद्ध युद्ध करते हुए वे मारे गए।

राव कान्हा (1423 – 1427 ई.)

- **उत्तराधिकार विवाद:** चूँडा ने अपने ज्येष्ठ पुत्र रणमल के स्थान पर मोहिलाणी रानी के पुत्र **कान्हा** को राजा बनाया।
- **रणमल का मेवाड़ प्रस्थान:** असंतुष्ट होकर रणमल अपनी बहन **हंसाबाई** के साथ मेवाड़ (राणा लाखा की शरण में) चले गए और वहाँ हंसाबाई का विवाह लाखा से करवाया।
- **मृत्यु:** लोक मान्यताओं के अनुसार राव कान्हा की मृत्यु **करणी माता** के हाथों हुई थी।

राव रणमल (1427 – 1438 ई.)

राव रणमल मारवाड़ और मेवाड़ के इतिहास की एक अत्यंत प्रभावशाली और विवादास्पद शख्सियत रहे हैं। उन्होंने अपनी कूटनीति से मारवाड़ की खोई हुई सत्ता प्राप्त की और मेवाड़ के प्रशासन में भी हस्तक्षेप किया।

1. मेवाड़ प्रस्थान और हंसाबाई का विवाह

- **नाराजगी का कारण:** राव चूँडा और रानी चाँद कँवर के ज्येष्ठ पुत्र होने के बावजूद, जब उन्हें उत्तराधिकारी नहीं बनाया गया, तो वे मेवाड़ के **राणा लाखा (लक्ष सिंह)** की शरण में चले गए।
- **जागीर:** राणा लाखा ने उन्हें **'धणला'** की जागीर प्रदान की।
- **ऐतिहासिक विवाह व शर्त:** रणमल ने अपनी बहन **हंसाबाई** का विवाह वृद्ध राणा लाखा से इस शर्त पर किया कि हंसाबाई से उत्पन्न पुत्र ही मेवाड़ का अगला महाराणा बनेगा। इस कारण लाखा के ज्येष्ठ पुत्र **कुँवर चूंडा** (मेवाड़ के भीष्म पितामह) को अपना अधिकार त्यागना पड़ा।

2. सत्ता प्राप्ति और प्रभाव

- **मंडौर पर अधिकार:** रणमल ने मेवाड़ के **राणा मोकल** की सैन्य सहायता से अपने भाई **राव कान्हा** के विरुद्ध युद्ध किया। इस संघर्ष में कान्हा मारा गया और रणमल ने मारवाड़ (मंडौर) की सत्ता हासिल की।
- **द्वैध नियंत्रण:** रणमल ने एक ही समय में मारवाड़ के राजा और मेवाड़ के संरक्षक के रूप में दोनों रियासतों पर अपना मजबूत नियंत्रण स्थापित कर लिया था।

3. रणमल का अंत (1438 ई.)

मेवाड़ के दरबार में राठौड़ों का बढ़ता प्रभाव मेवाड़ी सरदारों (सिसोदिया दल) को खटकने लगा था।

- **भारमली की भूमिका:** मेवाड़ के सरदारों ने रणमल की प्रेयसी **भारमली** को अपनी ओर मिला लिया।
- **हत्या:** 1438 ई. में चित्तौड़गढ़ दुर्ग में भारमली की सहायता से रणमल की हत्या कर दी गई। प्रचलित मान्यताओं के अनुसार, भारमली ने उन्हें शराब में विष दे दिया था और जब वे बेसुध हो गए, तब उन्हें पलंग से बांधकर मार दिया गया।

राव जोधा (1438 – 1489 ई.)

राव जोधा मारवाड़ के सबसे प्रतापी शासकों में से एक थे, जिन्होंने न केवल अपनी खोई हुई सत्ता वापस पाई, बल्कि **जोधपुर** नगर की स्थापना कर राठौड़ साम्राज्य को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया।

1. संघर्ष और सत्ता प्राप्ति

- **शरण:** पिता रणमल की हत्या (1438 ई.) के बाद जोधा चित्तौड़ से भाग निकले और बीकानेर के पास **काहुनी गाँव** में शरण ली।
- **मंडौर पर अधिकार:** मेवाड़ की सेना (कुँवर चूँडा के नेतृत्व में) ने मंडौर पर अधिकार कर लिया था। लगभग 15 वर्ष के कड़े संघर्ष के बाद **1453 ई.** में जोधा मंडौर पर पुनः अधिकार करने में सफल रहे।

2. जोधपुर नगर और मेहरानगढ़ की स्थापना

अध्याय - 5

आधुनिक राजस्थान

- 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के साथ ही राजपूत राज्यों पर मुग़ल केन्द्रीय सत्ता का नियंत्रण ढीला पड़ गया।
- सभी राजपूत राज्य अपने राज्य का विस्तार करने तथा पड़ौसी राज्य पर राजनैतिक वर्चस्व स्थापित कर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के प्रयत्न में लग गए।
- इस प्रकार के प्रयत्नों के फलस्वरूप राजपूत राज्यों में पारस्परिक संघर्ष बढ़ गये।
- शासकों ने पारस्परिक संघर्षों में सहायता प्राप्त करने के लिए बाहरी ताकतों (मराठा, अंग्रेज, होल्कर आदि) का सहारा लेने लगे।
- जब राज्यों में उत्तराधिकार संघर्ष में मराठों का हस्तक्षेप हुआ तो राजपूताना के शासकों ने मराठा के विरुद्ध ईस्ट इण्डिया कम्पनी से सहायता माँगी लेकिन अंग्रेजों ने इन प्रस्तावों पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि उस समय अंग्रेजों की नीति राजपूताना के लिए मराठों से युद्ध करने की नहीं थी।
- भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का आगमन 1600 ई. में हुआ था।
- 1757 ई. में प्लासी युद्ध के पश्चात् ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने पहली बार भारत में बंगाल में) राजनीतिक सत्ता प्राप्त की।
- रॉबर्ट क्लाइव सन् 1757 में बंगाल का प्रथम गवर्नर बना।
- 1764 ई. के बक्सर युद्ध के पश्चात् हुई इलाहाबाद संधि ने कम्पनी को भारत में पूर्णतः राजनीतिक शक्ति प्रदान की।
- वारेन हेस्टिंग्स 1772 ई. में बंगाल के प्रथम गवर्नर जनरल बने।
- वारेन हेस्टिंग्स ने सुरक्षा घेरे की नीति (पॉलिसी ऑफ रिंग फेंस) को अपनाया जिसके अनुसार कम्पनी द्वारा अपने अधिकृत प्रदेशों को शत्रुओं से सुरक्षा के लिए पड़ौसी राज्यों के साथ मैत्री संधि कर उन्हें बफर राज्यों के रूप में प्रयुक्त किया जाता था।
- लॉर्ड कार्नवालिस ने भारतीय शासकों के मामलों में अहस्तक्षेप की नीति अपनाई ।
- 1798 ई. में लॉर्ड वेलेजली ने देशी राज्यों के साथ सहायक संधि की नीति अपनाई।
- इस नीति के तहत देशी राज्यों की आंतरिक सुरक्षा व विदेशी नीति का उत्तरदायित्व अंग्रेजों पर था जिसका खर्च संबंधित राज्य को उठाना पड़ता था।
- कम्पनी इस हेतु उस राज्य में एक अंग्रेज रेजीडेन्ट की नियुक्ति करती थी एवं सुरक्षा हेतु उस देशी राज्य के खर्च पर अपनी सेना रखती थी।
- भारत में प्रथम सहायक संधि 1798 ई. में हैदराबाद के निजाम के साथ की गई।

राजस्थान की रियासतें और ब्रिटिश संधियां

क्र. सं.	संधिकर्त्ता राज्य	संधि के समय शासक	संधि की तिथि	अंग्रेज कम्पनी को दी जाने वाली खिराज राशि
1.	करौली	हरबक्षपालसिंह	9 नवम्बर, 1817	खिराज से मुक्त
2.	टोंक	अमीर खाँ	15 नवम्बर, 1817	-
3.	कोटा	उम्मेद सिंह	26 दिसम्बर, 1817	2,44,700 रु.
4.	जोधपुर	मानसिंह	6 जनवरी, 1818	1,08,000 रु.
5.	उदयपुर	भीमसिंह	22 जनवरी, 1818	राज्य की आय का 1/4 भाग
6.	बूँदी	विसनसिंह	10 फरवरी, 1818	80,000 रु.
7.	बीकानेर	सूरतसिंह	21 मार्च, 1818	मराठों को खिराज नहीं देता था, इसलिए खिराज से मुक्त
8.	किशनगढ़	कल्याणसिंह	7 अप्रैल , 1818	खिराज से मुक्त
9.	जयपुर	जगतसिंह	15 अप्रैल , 1818	संधि के प्रथम वर्ष कुछ नहीं, दूसरे वर्ष 4 लाख, चौथे वर्ष 6 लाख, पाँचवें वर्ष 7 लाख, छठें वर्ष 8 लाख फिर 8 लाख निश्चित।
10.	जैसलमेर	मूलराज	2 जनवरी, 1819	मराठों को खिराज नहीं देता था, अतः खिराज से मुक्त।
11.	प्रतापगढ़	सामन्तसिंह	5 अक्टूबर, 1818	धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को।
12.	डूंगरपुर	जसवन्त सिंह द्वितीय	1818 ई.	धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को।

13.	बाँसवाड़ा	उम्मेदसिंह	25 दिसम्बर, 1818	धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को।
14.	सिरोही	शिवसिंह	11 सितम्बर, 1823	संधि के तीन वर्ष तक खिराज से मुक्त उसके बाद आय के प्रति रुपये पर छः आना।
15.	झालावाड़	मदनसिंह	10 अप्रैल, 1838	80,000 रु. वार्षिक।

प्रश्न- राजपूताना की निम्नलिखित रियासतों ने 1817-1818 ई. में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ संधि पर हस्ताक्षर किये -

(1) कोटा (2) जोधपुर
(3) करौली (4) उदयपुर

निम्नलिखित में से कौन-सा अनुक्रम, कालाक्रमानुसार सही है ?

(a) (1), (2), (3), (4)
(b) (3), (4), (1), (2)
(c) (4), (1), (2), (3)
(d) (3), (1), (2), (4) (d)

- अगस्त 1803 ई. में आंग्ल-मराठा के द्वितीय युद्ध में मराठों की पराजय के पश्चात् मराठा पेशवा दौलतराव द्वारा 30 दिसम्बर, 1803 को अंग्रेजों के साथ सुर्जीअर्जन गाँव संधि कर जयपुर एवं जोधपुर राज्यों को अंग्रेजों को सौंप दिया।
- राजस्थान में सर्वप्रथम भरतपुर राज्य के महाराजा रणजीतसिंह के साथ 29 सितम्बर 1803 को लॉर्ड वेलेजली ने सहायक संधि की।
- आपसी अविश्वास के कारण यह संधि क्रियान्वित न हो पायी। इससे रुष्ट होकर लॉर्ड लेक के नेतृत्व में अंग्रेजों ने 5 बार भयंकर आक्रमण किये लेकिन अंग्रेज भरतपुर को जीतने में असफल रहे एवं अप्रैल 1805 में नई संधि हुई जिसमें भरतपुर की पूर्व की स्थिति रखी गई, भरतपुर राज्य की सीमा एवं क्षेत्रफल में कोई परिवर्तन नहीं किया गया तथा भरतपुर को डीग (वर्तमान डीग जिला) क्षेत्र लौटा दिया गया।
- अलवर प्रथम राज्य था जिसने ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ विस्तृत रक्षात्मक एवं आक्रामक संधि की थी।
- अंग्रेजों द्वारा जयपुर के महाराजा जगतसिंह द्वितीय के साथ 12 दिसम्बर, 1803 को संधि की गई।
- 1805 ई. में यह संधि भंग कर दी गई लेकिन मराठा सरदार एवं पिंडारियों के आतंक ने जयपुर-अंग्रेजों को पुनः संधि करने के लिए बाध्य कर दिया।
- 2 अप्रैल, 1818 को ईस्ट इण्डिया कम्पनी एवं जयपुर राज्य के मध्य पुनः संधि हुई।
- जोधपुर शासक भीमसिंह के समय जोधपुर राज्य के साथ 22 दिसम्बर, 1803 को संधि की गई। इस संधि की प्रमुख शर्तें एक-दूसरे को सहायता देने, परस्पर मित्रता बनाए रखने की थी।
- खिराज नहीं देने एवं जोधपुर राज्य में किसी फ्रांसीसी को नौकरी नहीं देने अथवा देने से पूर्व कम्पनी से सलाह मशविरा करना आदि थी।
- 1813 ई. में लॉर्ड हेस्टिंग्स के गवर्नर जनरल बनने के बाद कम्पनी सरकार की नीति में परिवर्तन आया।
- लॉर्ड हेस्टिंग्स ने घेरे की नीति के स्थान पर अधीनस्थ पार्थक्य की नीति को क्रियान्वित किया।

1817-18 की अधीनस्थ संधि

- 1818 ई. में राजपूत राज्यों के साथ संधियाँ करने के लिए लॉर्ड हेस्टिंग्स ने दिल्ली रेजीडेन्ट चार्ल्स मेटकॉफ को कार्य सौंपा। मेटकॉफ ने राज्य के प्रतिनिधियों से बातचीत कर संधि पत्र तैयार किये।
- सन् 1811 में चार्ल्स मेटकॉफ ने राजस्थान के राजपूत शासकों का एक परिसंघ बनाने का सुझाव दिया जो ब्रिटिश संरक्षण में कार्य करे।
- राजस्थान में अधीनस्थ पार्थक्य की नीति (1818 की संधि) को स्वीकार करने वाली पहली रियासत - करौली।
- (9 नवम्बर 1817) अधीनस्थ पार्थक्य संधि स्वीकार करने के समय करौली का शासक- हरबक्षपाल सिंह थे।
- अधीनस्थ पार्थक्य की संधि को स्वीकार करने वाला अंतिम राज्य - सिरोही (11 सितम्बर 1823) यहाँ के शासक महाराजा शिव सिंह थे।

प्रश्न- निम्नलिखित में से किसने राजपूताना की देशी रियासतों के साथ 1817-18 की अधीनस्थ संधि की बातचीत की थी ?
(1) डेविड ऑक्टरलोनी
(2) चार्ल्स मैटकॉफ
(3) आर्थर वेलेजली
(4) जॉन जॉर्ज Ans. 2

अधीनस्थ पार्थक्य संधि (1818) की शर्तें

1. अंग्रेजी कम्पनी एवं संधिकर्त्ता राज्य के साथ सदैव मित्रता के समन्ध बने रहेंगे। एक के मित्र तथा शत्रु दोनों के मित्र और शत्रु समझे जाएँगे।
2. संधिकर्त्ता राज्य की रक्षा करने का दायित्व कम्पनी का होगा।
3. संधिकर्त्ता राज्य कम्पनी का आधिपत्य स्वीकार करेगा और कम्पनी सरकार के अधीन रहते हुए सदैव सहयोग प्रदान करेंगे।

अध्याय – 7

विभिन्न देशी रियासतों में प्रजामण्डल आंदोलन

प्रजामण्डल

- 1927 ई. में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् की स्थापना के साथ ही सक्रिय राजनीति का काल आरम्भ हुआ।
- कांग्रेस का समर्थन मिल जाने के बाद इसकी शाखायें स्थापित की जाने लगी।
- 1931 ई. में रामनारायण चौधरी ने अजमेर में देशी राज्य लोक परिषद् का प्रथम प्रान्तीय अधिवेशन आयोजित किया।
- 1938 ई. में कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन में कांग्रेस ने एक प्रस्ताव पारित कर देशी रियासतों के लोगों द्वारा चलाये जाने वाले स्वतंत्रता संग्राम को नैतिक समर्थन दिया ।
- कांग्रेस के इस प्रस्ताव से देशी रियासतों में चल रहे स्वतंत्रता संग्राम को नैतिक समर्थन मिला । इन राज्यों में चल रहे आंदोलन प्रत्यक्ष रूप से कांग्रेस से जुड़ गये और राजनीतिक चेतना का विस्तार हुआ। प्रजामण्डल की स्थापना हुई, जिसने देशी शासकों के अधीन उत्तरदायी प्रशासन की मांग की।

बीकानेर में प्रजामण्डल

- बीकानेर के महाराजा गंगासिंह प्रतिक्रियावादी व निरंकुश शासक थे।
- गंगासिंह (1880-1943) प्रथम भरतपुर के बाद शांति समझौते पर हस्ताक्षर करने वाले एकमात्र भारतीय प्रतिनिधि व 1921 में स्थापित नरेन्द्र मण्डल के संस्थापकों में से एक थे।
- बीकानेर क्षेत्र के प्रारंभिक नेता कन्हैयालाल ढूँढ़ व स्वामी गोपालदास थे, इन्होंने 1907 में चूरू में सर्वहितकारिणी सभा स्थापित की।
- सर्वहितकारिणी सभा ने चूरू में लड़कियों की शिक्षा हेतु 'पुत्री पाठशाला' व अनुसूचित जातियों की शिक्षा के लिए कबीर पाठशाला स्थापित की गई। महाराजा इस रचनात्मक कार्य के प्रति भी आशंकित हो उठे और षड़यंत्र बताकर उन्हें प्रतिबंधित कर दिया।
- 26 जनवरी 1930 को स्वामी गोपालदास व चन्दनमल ब्राह्मण ने सहयोगियों के साथ चूरू के सर्वोच्च शिखर धर्मस्तुप पर तिरंगा फहराया।
- अप्रैल, 1932 ई. में जब लंदन में महाराजा गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने गये तो बीकानेर में एक दिग्दर्शन' नामक पेम्पलेट बांटे गये। जिसमें बीकानेर की वास्तविक दमनकारी नीतियों का खुलासा किया गया। लौटकर महाराजा ने सार्वजनिक सुरक्षा कानून लागू किया।
- स्वामी गोपालदास, चंदनमल बहड़, सत्यनारायण सर्राफ, खूबचन्द सर्राफ आदि को बीकानेर षड़यंत्र केस के नाम पर गिरफ्तार कर लिया गया।
- अक्टूबर, 1936 में मघाराम वैद्य ने कलकत्ता में बीकानेर प्रजामण्डल की स्थापना की।
- 4 अक्टूबर, 1936 ई. को प्रमुख नेता शीघ्र ही निर्वाचित कर दिये गये, जिनमें वकील मुक्ताप्रसाद, मघाराम वैद्य व लक्ष्मीदास शामिल थे । रघुवरदयाल ने 22 जुलाई, 1942 ई. को बीकानेर प्रजा ने परिषद् की स्थापना की, जिसका उद्देश्य महाराजा के नेतृत्व में उत्तरदायी शासन की स्थापना करना था।
- 1943 में गंगासिंह जी की मृत्यु के बाद शार्दुल सिंह गद्दी पर बैठे। वे भी दमन में विश्वास रखते थे।
- द्वारका प्रसाद नामक छठी कक्षा के बालक को संस्था से निकाला गया क्योंकि उसने उपस्थिति गणना के समय जयहिन्द बोल दिया था।
- 26 अक्टूबर, 1944 ई. को बीकानेर दमन विरोधी दिवस मनाया गया जो राज्य में प्रथम सार्वजनिक प्रदर्शन था। इसी बीच भारत में राजनीतिक गतिविधियां तेज हो गई और महाराजा ने उत्तरदायी शासन की घोषणा की।
- 30 जून, 1946 ई. में रायसिंह नगर में हो रहे प्रजा परिषद् के सम्मेलन में पुलिस ने गोलीबारी की। बदली हुई परिस्थितियों को देखते हुए सत्ता हस्तान्तरण के लक्षण जब दिखने लगे तो प्रजा परिषद् का कार्यालय पुनः स्थापित किया गया।
- 1946 ई. में ही दो समितियों, संवैधानिक समिति व मताधिकार समिति की स्थापना की गई। रिपोर्ट को लागू करने का आश्वासन तो दिया गया पर कोई ठोस कार्यवाही नहीं हो पाई व उत्तरदायी शासन की मांग अधूरी ही रही।
- 16 मार्च, 1948 ई. में जसवंत सिंह दाउदसर के नेतृत्व में मंत्रिमण्डल बना जिसे प्रजा परिषद ने अस्वीकृत कर दिया और उसके मंत्रियों ने इस्तीफा दिया।
- 30 मार्च, 1949 ई. को वृहत्तर राज्य के निर्माण के साथ रघुवर दयाल, हीरालाल शास्त्री के मंत्रिमण्डल में सम्मिलित हुए।

जैसलमेर में प्रजामण्डल

- यह क्षेत्र राजस्थान का सर्वाधिक पिछड़ा क्षेत्र था, जो विस्तारित रेगिस्तान, यातायात संचार के सीमित साधनों व राजनीतिक पृथकता के कारण शेष राजस्थान से कटा ही रहा।
- यहाँ के महारावल का दमन अत्यन्त तीव्र था। जिसके कारण 1915 ई. में सर्व हितकारी वाचनालय मीठालाल व्यास के आशीर्वाद से सागरमल गोपा व उसके साथियों द्वारा स्थापित किया गया।

मेवाड़ में प्रजामण्डल

- उदयपुर में प्रजामण्डल आंदोलन की स्थापना का श्रेय श्री माणिक्यलाल वर्मा को जाता है। 24 अप्रैल, 1938 को श्री बलवन्तसिंह मेहता की अध्यक्षता में मेवाड़ प्रजामण्डल की स्थापना की।
- प्रजामण्डल की स्थापना के समाचारों से मेवाड़ की जनता में अभूतपूर्व उत्साह का संचार हुआ, परन्तु जैसे ही मेवाड़ सरकार को इसकी सूचना मिली, सरकार ने श्री वर्माजी को

मेवाड़ से निष्कासित कर दिया तथा बिना सरकार से आज्ञा लिए सभा, समारोह करने संस्थाएँ बनाने एवं जुलूस निकालने पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

- उदयपुर सरकार द्वारा मेवाड़ प्रजामण्डल को 24 सितम्बर, 1938 को गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया, परन्तु उसी दिन नाथद्वारा में निषेधाज्ञा के बावजूद कार्यकर्ताओं द्वारा विशाल जुलूस निकाला गया।
- प्रजामण्डल कार्यकर्ताओं ने सरकार को अल्टीमेटम दिया कि 4 अक्टूबर, 1938 तक प्रजामण्डल से प्रतिबन्ध नहीं हटाया गया तो सत्याग्रह प्रारम्भ किया जाएगा।
- मेवाड़ सरकार ने प्रजामण्डल नेताओं व कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया । श्री भूरेलाल बया को सराड़ा किले (मेवाड़ का काला पानी) में नजरबंद कर दिया गया।
- विजयादशमी के दिन प्रजामण्डल कार्यकर्ताओं ने सत्याग्रह प्रारम्भ किया । क्रांतिकारी रमेशचन्द्र व्यास को पहला सत्याग्रही बनकर गिरफ्तार होने का श्रेय प्राप्त हुआ। सत्याग्रहियों पर पुलिस दमन चक्र प्रारम्भ हो गया।
- इसकी परवाह न करते हुए सत्याग्रहियों ने जगह-जगह जुलूस निकालें, आमसभाएँ की एवं सरकार की आलोचना की।
- श्री माणिक्यलाल वर्मा ने 'मेवाड़ का वर्तमान शासन' नामक पुस्तिका छपवाकर वितरित करवाई जिसमें मेवाड़ में व्याप्त अव्यवस्था एवं तानाशाही की आलोचना की गई।
- 24 जनवरी, 1939 को श्री माणिक्यलाल वर्मा की पत्नी नारायणी देवी वर्मा एवं पुत्री को प्रजामण्डल आंदोलन में भाग लेने के कारण राज्य से निष्कासित कर दिया गया।
- मेवाड़ में भयंकर अकाल पड़ने के कारण प्रजामण्डल ने गाँधीजी के आदेश पर 3 मार्च, 1939 को सत्याग्रह स्थगित कर दिया गया। श्री वर्माजी का स्वास्थ्य खराब होने की खबर मिलने पर श्री जवाहर लाल नेहरू ने मेवाड़ सरकार को पत्र लिखा, तब 8 जनवरी, 1940 को उन्हें जेल से रिहा किया गया।
- इसके बाद प्रजामण्डल ने बेगार एवं बलेठ प्रथा के विरुद्ध अभियान चलाया फलस्वरूप मेवाड़ सरकार को इन दोनों, प्रथाओं पर रोक लगानी पड़ी। यह मेवाड़ प्रजामण्डल की पहली नैतिक विजय थी।
- 22 फरवरी, 1941 को मेवाड़ प्रजामण्डल पर से प्रतिबन्ध हटने के बाद प्रजामण्डल ने सदस्यता अभियान प्रारम्भ किया एवं 25-26 नवम्बर, 1941 को श्री माणिक्यलाल वर्मा की अध्यक्षता में पहला अधिवेशन आयोजित किया, जिसका उद्घाटन आचार्य 'जे. बी. कृपलानी' ने किया।
- अधिवेशन में अपार भीड़ के समक्ष राज्य में उत्तरदायी शासन की स्थापना, सरकार द्वारा प्रस्तावित धारा सभा में संशोधन एवं नागरिक अधिकारों की बहाली आदि प्रस्ताव पारित किए गए। इसके बाद मेवाड़ के प्रत्येक जिले एवं परगने में प्रजामण्डल की शाखाएँ खोली गई।
- मेवाड़ प्रजामण्डल ने कांग्रेस द्वारा 9 अगस्त, 1942 को शुरू किये गये 'भारत छोड़ो आंदोलन' में सक्रिय रूप से भाग लेना प्रारम्भ किया।
- 20 अगस्त, 1942 को प्रजामण्डल की कार्यसमिति ने मेवाड़ महाराणा को पत्र द्वारा चेतावनी दी कि यदि 24 घंटे के भीतर महाराजा ब्रिटिश सरकार से संबंध विच्छेद नहीं करते हैं तो जन आंदोलन प्रारम्भ किया जाएगा।
- सरकार द्वारा प्रजामण्डल कार्यकारिणी के सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया गया तथा 23 अगस्त से जुलूस आदि पर प्रतिबंध लगा दिए गये। सरकारी दमन चक्र प्रारम्भ हो गया कार्यकर्ताओं ने सर्वत्र 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' के नारे बुलन्द किए गये। स्त्रियों एवं छात्रों ने भी आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।
- सरकार ने बड़ी संख्या में सत्याग्रहियों को गिरफ्तार कर लिया। नारायणी देवी वर्मा, उनकी पुत्री आदि कई महिलाओं को गिरफ्तार किया गया। मेवाड़ प्रजामण्डल को मेवाड़ सरकार द्वारा वापस गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया।
- प्रजामण्डल ने भील सेवाकार्य, भील छात्रावास आदि कार्यों को पुनः प्रारम्भ किया। ठक्कर बापा की सलाह से उचित योजना बनाई गई।
- मेवाड़ हरिजन सेवक संघ के कार्यों को पुनर्गठित कर वहाँ गृह उद्योगों का विकास किया गया।
- 31 दिसम्बर, 1945 एवं 1 जनवरी, 1946 को उदयपुर के सलेटिया मैदान में 'अखिल भारतीय देशी लोक राज्य परिषद्' का छठा अधिवेशन पं. जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में हुआ जिसमें प्रस्ताव पारित कर देशी रियासतों के शासकों से बदलती राजनीतिक परिस्थितियों के अनुरूप अविलंब उत्तरदायी शासन की स्थापना की अपील की गई।

मारवाड़ में प्रजामण्डल आंदोलन

- जोधपुर राज्य में उत्तरदायी शासन की स्थापना एवं नागरिक अधिकारों की माँग बीसवीं सदी के तीसरे दशक में जोर पकड़ने लगी। जागरूक कार्यकर्ताओं- जयनारायण व्यास, भँवरलाल सर्राफ, आनन्दराज सुराणा आदि ने इस हेतु 1920 में 'मारवाड़ सेवा संघ' नामक पहली राजनीतिक संस्था स्थापित की।
- परन्तु इसके कुछ समय बाद ही निष्क्रिय हो जाने के कारण 1921 ई. में इसके स्थान पर 'मारवाड़ हिताकारिणी सभा' का गठन हुआ।
- इन्होंने समय-समय पर सरकार की जनविरोधी नतियों की आलोचना की एवं विरोध प्रकट किया।
- 11-12 अक्टूबर, 1929 को मारवाड़ हितकारिणी सभा का प्रथम अधिवेश जोधपुर में आयोजित होना था परन्तु जोधपुर सरकार ने इस पर प्रतिबंध लगा दिया एवं प्रमुख राजनीतिक नेताओं - जयनारायण व्यास, आनन्दराज सुराणा एवं भँवरलाल सर्राफ आदि को जेल में डाल दिया गया एवं अध्यादेश द्वारा सभा, जुलूस, धरने आदि पर प्रतिबंध लगा दिया।

संयुक्त राजस्थान (राजस्थान के एकीकरण का तृतीय चरण)

- **उदयपुर का विलय:** जब उदयपुर (मेवाड़) रियासत 'पूर्व राजस्थान संघ' में सम्मिलित नहीं हुई, तो स्थानीय प्रजामण्डल और जनता ने इसका तीव्र विरोध किया। जनभावना और प्रजामण्डल के दबाव में आकर मेवाड़ के महाराणा भूपाल सिंह ने अपने प्रतिनिधि **सर राममूर्ति** को तीन प्रमुख शर्तों के साथ सरदार पटेल के पास भेजा।
- **महाराणा भूपाल सिंह की तीन शर्तें:**

1. महाराणा को संयुक्त राजस्थान का **वंशानुगत राजप्रमुख** बनाया जाए।
2. नए संघ की राजधानी **उदयपुर** रखी जाए।
3. महाराणा को **20 लाख रुपये** वार्षिक प्रिवीपर्स (राजभत्ता) दिया जाए।

- **पटेल का निर्णय:** सरदार पटेल ने रियासती विभाग के नियमों का हवाला देते हुए वंशानुगत पद की मांग को तो पूरी तरह स्वीकार नहीं किया, परंतु महाराणा को **आजीवन राजप्रमुख** बनाने और प्रिवीपर्स के रूप में 10 लाख रुपये + 5 लाख रुपये (धार्मिक कार्यों हेतु) + 5 लाख रुपये (राजप्रमुख भत्ता) देने का समझौता किया।
- **प्रशासनिक ढाँचा:**
  - **उद्घाटन: 18 अप्रैल 1948** को पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा उदयपुर के सिटी पैलेस में।
  - **राजप्रमुख:** महाराणा भूपाल सिंह (मेवाड़)।
  - **उप-राजप्रमुख:** महाराव भीमसिंह (कोटा)।
  - **कनिष्ठ उप-राजप्रमुख:** महारावल लक्ष्मण सिंह (डूंगरपुर) एवं महाराजा बहादुर सिंह (बूँदी)।
  - **प्रधानमंत्री: माणिक्य लाल वर्मा।**
  - **उप-प्रधानमंत्री:** गोकुल लाल असावा।
- **संघ की सांख्यिकी:**
  - **क्षेत्रफल:** 29,777 वर्ग मील।
  - **जनसंख्या:** 42,60,918।
  - **वार्षिक आय:** 3.16 करोड़ रुपये।
- **विशेष तथ्य:** मेवाड़ के विलय से राजस्थान का एकीकरण एक शक्तिशाली मोड़ पर पहुँच गया। उदयपुर के विलय के साथ ही राजस्थान की सबसे प्राचीन और गौरवशाली रियासत भारतीय संघ का हिस्सा बन गई।

वृहद् राजस्थान (राजस्थान के एकीकरण का चतुर्थ चरण)

- **विशाल रियासतों का विलय:** राजस्थान के एकीकरण का यह सबसे महत्वपूर्ण चरण था। **30 मार्च 1949** को 'संयुक्त राजस्थान' में चार बड़ी रियासतों– **जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर** (सहित लावा ठिकाना) का विलय किया गया। इसी कारण 30 मार्च को प्रतिवर्ष **'राजस्थान दिवस'** के रूप में मनाया जाता है।
- **उद्घाटन:** इस विशाल संघ का उद्घाटन **लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल** ने जयपुर के सिटी पैलेस में किया।
- **प्रशासनिक ढाँचा:**
  - **महाराज प्रमुख:** महाराणा भूपाल सिंह (उदयपुर)। यह पद विशेष रूप से उनके सम्मान के लिए सृजित किया गया था।
  - **राजप्रमुख:** सवाई मानसिंह द्वितीय (जयपुर)।
  - **उप-राजप्रमुख:** महाराव भीमसिंह (कोटा)।
  - **प्रधानमंत्री:** पंडित हीरालाल शास्त्री।
- **राजधानी और विभागीय बँटवारा: पी. सत्यनारायण राव समिति** की सिफारिशों के आधार पर जयपुर को संघ की स्थाई राजधानी घोषित किया गया। रियासतों के मध्य संतुलन बनाए रखने के लिए विभिन्न महत्वपूर्ण राजकीय विभागों का वितरण अन्य प्रमुख शहरों में किया गया:

जैसे –

हाइकोर्ट	जोधपुर
शिक्षा विभाग	बीकानेर
खनिज एवं कस्टम विभाग	उदयपुर
वन विभाग	कोटा
कृषि विभाग	भरतपुर

वृहद् राजस्थान के निर्माण के समय के महत्वपूर्ण घटनाक्रम

- **विमान दुर्घटनाएँ और दृढ़ संकल्प:** वृहद् राजस्थान के उद्घाटन से ठीक एक दिन पूर्व, **29 मार्च 1949** को सरदार वल्लभ भाई पटेल का विमान तकनीकी खराबी के कारण नदी के सूखे पाट पर लैंड करना पड़ा और वे कुछ समय के लिए लापता हो गए। हालांकि, वे सुरक्षित रहे और निश्चित मुहूर्त पर ही उद्घाटन संपन्न हुआ। इसी प्रकार जयपुर महाराजा मानसिंह द्वितीय का विमान भी दिल्ली जाते समय दुर्घटनाग्रस्त हुआ था।
- **प्रधानमंत्री पद का विवाद:** हीरालाल शास्त्री को प्रधानमंत्री बनाए जाने का कांग्रेस के भीतर भारी विरोध हुआ। माणिक्य लाल वर्मा और जयनारायण व्यास जैसे दिग्गज नेता **गोकुल भाई भट्ट** को प्रधानमंत्री बनाना चाहते थे। अधिकांश कार्यकर्ता जयनारायण व्यास के पक्ष में थे। विरोध स्वरूप माणिक्य लाल वर्मा ने मंत्रिमंडल में कोई भी राजकीय पद ग्रहण करने से इनकार कर दिया।
- **शपथ समारोह में अव्यवस्था:** हीरालाल शास्त्री के शपथ ग्रहण समारोह के दौरान प्रोटोकॉल की चूक के कारण माणिक्य लाल वर्मा और जयनारायण व्यास को आगे की पंक्तियों में स्थान नहीं मिला। इससे नाराज होकर कार्यकर्ताओं ने समारोह स्थल पर जमकर नारेबाजी की।
- **वृहद् राजस्थान की मांग:** सर्वप्रथम **डॉ. राम मनोहर लोहिया** ने 'राजस्थान आंदोलन समिति' के माध्यम से राजस्थान की सभी रियासतों को मिलाकर एक वृहद् राजस्थान बनाने की मांग पुरजोर तरीके से उठाई थी।
- **हनुवंत सिंह और 'पेन पिस्टल' कांड:** जोधपुर के महाराजा हनुवंत सिंह भारत में विलय के पक्ष में नहीं थे। विलय पत्र पर हस्ताक्षर करते समय उन्होंने रियासती विभाग के सचिव **वी.पी. मेनन** पर अपनी 'पेन पिस्टल' तान दी थी। बाद में लॉर्ड माउंटबेटन ने हस्तक्षेप कर वह पिस्तौल उनसे ले ली,

कला संस्कृति

अध्याय – I

राजस्थानी साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियाँ एवं क्षेत्रीय बोलियाँ

❖ **राजस्थानी साहित्य**

➢ राजस्थानी साहित्य को विषय और शैली की दृष्टि से पाँच भागों में बांटा जा सकता है :-

(1) जैन साहित्य
(2) चारण, साहित्य
(3) ब्राह्मण साहित्य
(4) संत साहित्य
(5) लोक साहित्य

❖ **जैन साहित्य**

- जैन धर्मावलम्बियों यथा- जैन आचार्यो, मुनियों, यतियों, एवं श्रावकों तथा जैन धर्म से प्रभावित साहित्यकारों द्वारा वृहद् मात्रा में रचा गया साहित्य जैन साहित्य कहलाता है।
- यह साहित्य विभिन्न प्राचीन मंदिरों के ग्रन्थागारों में विपुल मात्रा में संग्रहित है।
- यह साहित्य धार्मिक साहित्य है जो गद्य एवं पद्य दोनों में उपलब्ध है।

❖ **चारण साहित्य**

- राजस्थान के चारण आदि विरुद्ध गायक कवियों द्वारा रचित अन्याय कृतियों को सम्मिलित रूप से चारण साहित्य कहते हैं।
- चारण साहित्य मुख्यतः पद्य में रचा गया है।
- इसमें वीर रसात्मक कृतियों का बाहुल्य है।

❖ **ब्राह्मण साहित्य**

- राजस्थानी साहित्य में ब्राह्मण साहित्य अपेक्षाकृत कम मात्रा में उपलब्ध है कान्हड़दे प्रबन्ध, हम्मीरायण, बीसलदेव रासौ, रणमल छंद आदि प्रमुख गन्थ इस श्रेणी के ग्रंथ है।

❖ **संत साहित्य**

- मध्यकाल में भक्ति आंदोलन की धारा में राजस्थान की शांत एवं सौम्य जलवायु में इस भू-भाग पर अनेक निर्गुणी एवं सगुणी संत-महात्माओं का आविर्भाव हुआ।
- इन उदारमना संतों ने ईश्वर भक्ति में एवं जन-सामान्य के कल्याणार्थ विपुल साहित्य की रचना यहाँ की लोक भाषा में की है।
- संत साहित्य अधिकांशत पद्यमय ही है।

❖ **लौक साहित्य**

- राजस्थानी साहित्य में सामान्य जन द्वारा प्रचलित लोक शैली में रचे गये साहित्य की भी अपार थापी विद्यमान है।
- यह साहित्य लोक गाथाओं, लोकनाट्यों कहावतों, पहेलियों एवं लोक गीतों के रूप में विद्यमान है।
- जैसे- "सत मत छोड़े सूरमा, सत छोड्या पत जाय। सत रही बांदी लिछमी, फेर मलेगी आय।"

➢ राजस्थानिक साहित्य गद्य एवं पद्य दोनों में रचा गया है।
➢ इसका लेखन मुख्यतः निम्न विधाओं में किया गया है-

- **ख्यात**

✓ राजस्थानी साहित्य के इतिहासपरक ग्रंथ, जिनकी रचना तत्कालीन शासकों ने अपनी मान मर्यादा एवं वंशावली के चित्रण हेतु करवाई 'ख्यात' कहलाते हैं।
✓ मुहणोत नैणसी री ख्यात, दयालदास री ख्यात, बीकानेर रां राठौड़ा री ख्यात आदि प्रसिद्ध हैं।

- **वंशावली**

✓ इस श्रेणी की रचनाओं में राजवंशों की वंशावलियां विस्तृत विवरण सहित लिखी गई हैं। जैसे- राठौड़ा री वंशावली, राजपुता री वंशावली आदि।

- **वात**

✓ वात का अर्थ ऐतिहासिक, पौराणिक, प्रेमपरक व काल्पनिक कथा या कहानी से है।

- **प्रकाश**

✓ किसी वंश अथवा व्यक्ति विशेष की उपलब्धियों या घटना विशेष पर प्रकाश डालने वाली कृतियाँ 'प्रकाश' कहलाती है।
✓ राजप्रकाश, पाबू प्रकाश, उदय प्रकास आदि इनके मुख्य उदाहरण है।

- **वचनिका**

✓ शब्द संस्कृत के वचन शब्द से बना है।
✓ यह गद्य पद्य मिश्रित काव्य विधा के रूप में राजस्थानी साहित्य में प्रचलित हुआ है।
✓ वचनिका मुख्यतः अपभ्रंश मिश्रित राजस्थानी में लिखी हुई है।
✓ राजस्थानी साहित्य में अचलदास खींची री वचनिका एवं राठौड़ रतनसिंह जी, महेस दासौत री वचनिका प्रमुख है।

- **मरस्या**

✓ राजा या किसी व्यक्ति विशेष की मृत्योपरांत शोक व्यक्त करने के लिए रचित काव्य, जिसमें उसके व्यक्ति के चारित्रिक गुणों के अलावा अन्य क्रिया-कलापों का वर्णन किया जाता है।

- **दवावैत**

✓ यह उर्दू और फारसी की शब्दावली से युक्त राजस्थानी कलात्मक लेखन शैली है, किसी व्यक्ति विशेष की प्रशंसा दोहों के रूप में की जाती है।

- **रासौ**

✓ राजाओं की प्रशंसा में लिखे गए काव्य ग्रंथ जिनमें उनके युद्ध अभियानों व वीरतापुर्ण कृत्यों के विवरण के साथ उनके राजवंश का विवरण भी मिलता है।
✓ बीसलदेव रासौ, पृथ्वीराज रासौ आदि मुख्य रासौ ग्रंथ है।

- **वेलि-** राजस्थानी वेलि साहित्य में शासकों एवं सामन्तों की वीरता, इतिहास, विद्वता, प्रेम-भावना, स्वामिभक्ति, वंशावली आदि घटनाओं का उल्लेख होता है।

✓ पृथ्वीराज राठौड़ लिखित 'वेलि किसन रुकमणिरी' वेलि ग्रंथ प्रसिद्ध है।

- **विगत**

✓ यह भी इतिहास परक ग्रंथ लेखन की शैली है।
✓ 'मारवाड़ रा परगना री विगत इस शैली की प्रमुख रचना है।

❖ राजस्थान के साहित्य में प्रथम

➢ राजस्थान की प्राचीनतम रचनाः-

✓ भरतेश्वर बाहूबलि घोर (लेखक- वज्रसेन सूरि - 1168 ई. के लगभग)
✓ भाषा - मारू गुर्जर
✓ विवरण - भारत और बाहूबलि के बीच हुए युद्ध का वर्णन।

- **संवतोल्लेख वाली प्रथम राजस्थानी रचनाः-**

✓ भारत बाहूबलि रास (1184 ई,) में शालिभद्र सूरि द्वारा रचित ग्रंथ मारू गुर्जर भाषा में रचित रास परम्परा में सर्वप्रथम और सर्वाधिक पाठ वाला खण्ड काव्य।

- **वचनिका शैली की प्रथम सशक्त रचनाः-**

✓ अचलदास खींची री वचनिका (शिवदास गाडण)

- **राजस्थानी भाषा का सबसे पहला उपन्यासः-**

✓ कनक सुन्दर
✓ इस उपन्यास की रचना 1903 ई. में शिवचंद्र भरतिया द्वारा की गई थी।
✓ शिवचंद्र भरतिया को राजस्थान का भारतेंदु हरिश्चंद्र कहा जाता है।

- **राजस्थानी का प्रथम नाटकः-**

✓ केसर विलास के लेखक शिवचन्द्र भरतिया थे।

- **राजस्थानी में प्रथम कहानीः-**

✓ विश्रांत प्रवास (1904- शिवचन्द्र भरतिया)

- **स्वातंत्र्योत्तर काल का प्रथम राजस्थानी उपन्यासः-**

✓ आभैपटकी (1956- श्रीलाल नथमल जोशी)।

- **आधुनिक राजस्थान की प्रथम काव्यकृतिः-**

✓ बादली (चन्द्रसिंह बिरकाली)
✓ यह स्वतंत्र प्रकृति की प्रथम महत्त्वपुर्ण कृति है।

❖ राजस्थानी साहित्य की प्रमुख रचनाएः-

➢ पृथ्वीराज रासौ (कवि चन्दबरदाई):-

- इस ग्रंथ की रचना चन्दबरदाई ने की लेकिन इसे पूरा चन्द्रबरदाई के पुत्र जल्हण ने किया।
- यह ग्रंथ को 64 सर्गों में विभाजित किया गया है ।
- इसमें 1 लाख छंद हैं।
- इस ग्रंथ से तत्कालीन समय की सामाजिक और धार्मिक स्थिति की जानकारी प्राप्त होती है।
- यह ग्रंथ डिंगल व पिंगल दोनों शैली में लिखा गया है।
- पृथ्वीराज रासो में 1300 छंदो को ही प्रमाणित माना गया है।
- इसमें अजमेर के अन्तिम चौहान सम्राट- पृथ्वीराज चौहान तृतीय के जीवन चरित्र एवं युद्धों का वर्णन किया गया है ।

➢ खुमाण रासौ (दलपत विजय)

- पिंगल भाषा के इस ग्रंथ में मेवाड़ के बप्पा रावल से लेकर महाराजा राजसिंह तक के मेवाड़ शासकों का वर्णन है। इस ग्रन्थ में हल्दीघाटी युद्ध के समय महाराणा प्रताप व उनके भाई शक्ति सिंह के मध्य हुई वार्ता का उल्लेख मिलता है।
- विन्डैरासो- राव महेशदास इस ग्रंथ में अलवर के शासक अर्जुन गौड़ की वीरता का गुणगान है । इस ग्रंथ में मुगल उत्तराधिकार युद्ध (1657-59 ई.) का वर्णन है जिसमें मारवाड़ का शासक जसवंत सिंह प्रथम का भी वर्णन है ।

➢ सगत रासौ (गिरधर आसिया)

- इस डिंगल ग्रंथ में महाराणा प्रताप के छोटे भाई शक्तिसिंह का वर्णन है।
- यह 943 छंदों का प्रबंध काव्य है।
- कुछ पुस्तकों में इसका नाम सगतसिंह रासौ भी मिलता है।
- यह ग्रंथ महाराणा राजसिंह के समय (1652-80 ई.) लिखा गया ।

➢ **हम्मीर रासौ (जोधराज/ सारंगधर)**- इस काव्य ग्रंथ में रणथम्भौर शासक राणा चौहान की वंशावली व अलाउद्दीन खिलजी से युद्ध एवं उनकी वीरता आदि का विस्तृत वर्णन है।

➢ बीसलदेव रासौ (नरपति नाल्ह)

- इसमें अजमेर के चौहान शासक बीसलदेव (विग्रहराज चतुर्थ) एवं उनकी रानी राजमती (मालवा के राजा भोज परमार की पुत्री) की प्रेमगाथा का वर्णन है ।
- यह ग्रंथ राजस्थानी व गुजराती भाषा का मिश्रण है ।
- बीसलदेव के उड़ीसा अभियान का भी उल्लेख है ।

➢ खुमाण रासो (दलपत विजय)

- इस ग्रंथ की रचना दलपत विजय पिंगल शैली में की है ।
- इसमें मेवाड़ के बप्पा रावल से राजसिंह तक का इतिहास है।

➢ क्यामखाँ रासो (कविजान / नियामत खाँ)

- इसमें चौहानों को वत्सगौत्रीय बताया गया।
- इस ग्रन्थ में महमूद गजनवी व गोगाजी के मध्य हुए युद्ध का भी उल्लेख मिलता है।
- इस ग्रंथ के अनुसार दिल्ली के सुल्तान फिरोजशाह तुगलक ने करमचंद को मुसलमान बनाया तथा उसके वंशज क्यामखाँ मुसलमान कहलाए।

➢ प्रताप रासो (जाचक जीवण)

- इसमें अलवर शासक राव राजा प्रतापसिंह का इतिहास है।

➢ **मानचरित्र रासो (कवि नरोत्तम)**- इसमें आमेर के राजा मानसिंह व हल्दीघाटी युद्ध का वर्णन है।

➢ विजयपाल रासौ (नल्ल सिंह)

- पिंगल भाषा के इस वीर-रसात्मक ग्रंथ में विजयगढ़ (करौली) के यदुवंशी राजा विजयपाल की दिग्विजय एवं पंग लड़ाई का वर्णन है।
- नल्लसिंह सिरोहिया शाखा का भाट था और वह विजयगढ़ के यदुवंशी नरेश विजयपाल का आश्रित कवि था।

➢ **रतन रासो (कुम्भकरण)**- इस ग्रंथ में जोधपुर एवं जालौर के राठौड़ वंश का इतिहास है।

अध्याय – 3

लोक संगीत एवं लोक नृत्य

- **शास्त्रीय संगीत**
- **शास्त्रीय नृत्य**
- **लोक संगीत एवं लोकगीत**
- **लोक नृत्य एवं नाट्य**

➢ संगीत से तात्पर्य गायन, वादन एवं नृत्य से है और यही तीन पक्ष इसके विकास के द्योतक हैं ।

➢ संगीत कला को दो भागों में बांटा जाता है।

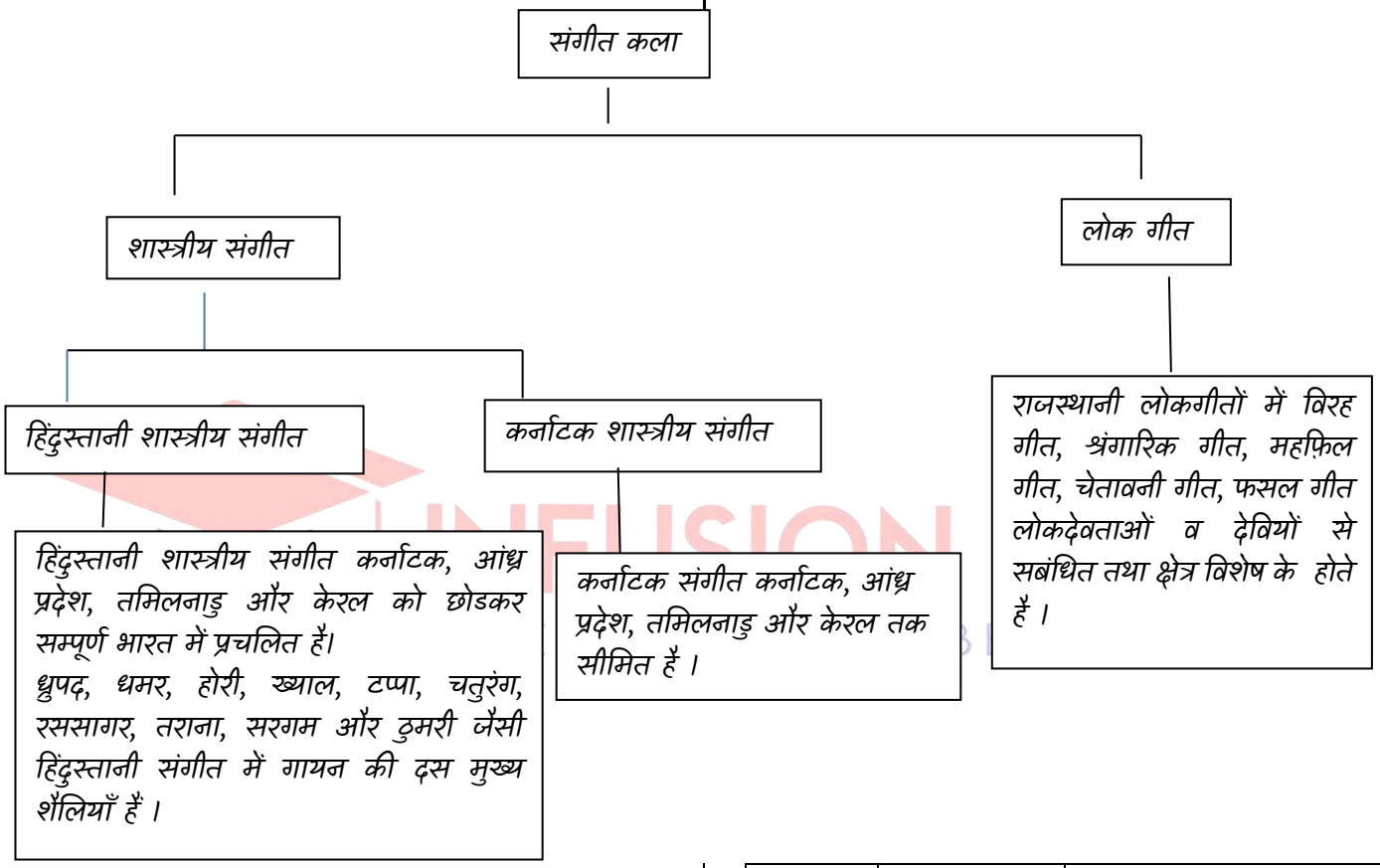

शास्त्रीय संगीत

- यह एक विशिष्ट गायन, वादन तथा नृत्य शैली का सूचक होता है जिसमें निश्चित नियमों का पालन किया जाता है ।
- इसमें भारतीय एवं ईरानी संगीत का समन्वय हुआ है ।
- भारतीय शास्त्रीय संगीत की परम्परा का संरक्षण विशिष्ट गुरु तथा शिष्य परम्परा के संयोग से बनता है, उस विशिष्ट गुरु शिष्य परम्परा को' घराना' कहा जाता है ।
- **राजस्थान में गायन, वादन व नृत्य के प्रमुख घराने**

राजस्थान में गायन के प्रमुख घराने

घराना	प्रवर्तक	विशेषताएँ
जयपुर घराना	मनरंग (भूपत खां)	ख्याल गायन शैली का घराना है। मुहम्मद अली खां कोठी वाले इस घराने के प्रसिद्ध संगीतज्ञ हुए हैं।
पटियाला घराना	फ़तेह अली व अली बख्श(टोंक के नवाब इब्राहीम के दरबारी)	यह जयपुर घराने की उपशाखा है। (प्रसिद्ध पाकिस्तानी गजल गायक गुलाम अली इसी घराने के सदस्य है)
मेवाती घराना	उस्ताद घग्घे नजीर खां	इन्होंने जयपुर की ख्याल गायकी को ही अपनी विशिष्ट शैली में विकसित कर यह घराना प्रारम्भ किया।
डागर घराना	बहराम खां डागर	महाराजा रामसिंह के दरबारी गायक
रंगीला घराना	रमजान खां मियाँ रंगीले	मियाँ रंगीले जोधपुर के गायक इमाम बख्श के शिष्य थे।

राजस्थान में वादन के प्रमुख घराने		
घराना	**प्रवर्तक**	**विशेषताएँ**
बीनकार घराना(जयपुर	रज्जब अली बीनकार	रज्जब अली जयपुर के महाराजा रामसिंह के दरबार में प्रसिद्ध बीनकार थे।
सेनिया घराना(जयपुर)	तानसेन के पुत्र सूरत सेन	यह सितारवादियों का घराना है। इस घराने के गायक ध्रुपद की गौहर वाणी व खण्डारवाणी में सिद्धहस्त थे।

राजस्थान में नृत्य के प्रमुख घराने		
घराना	**प्रवर्तक**	**विशेषताएँ**
जयपुर का कथक घराना	भानूजी	उत्तर भारत के प्रसिद्ध शासीय नृत्य कथक का उद्भव राजस्थान में 13वीं सदी में माना जाता है।

राजस्थान की प्रमुख स्थानीय गायन शैलियाँ

(i) माँड गायिकी - माँड क्षेत्र (जैसलमेर) में गाई जाने वाली राग' माँड' राग कहलाई।

- राज्य की प्रसिद्ध माड गायिकाएँ - श्रीमती बन्नो बेगम (जयपुर) स्व. हाजन अल्लाह - जिलाह बाई (बीकानेर), स्व. गवरी देवी (बीकानेर), गवरी देवी (पाली), माँगीबाई (उदयपुर), श्रीमती जमीला बानो (जोधपुर) आदि ।

(ii) मांगणियार गायिकी

- माँगणियार मुस्लिम मूलतः सिंध प्रांत के है।
- राजस्थान की पश्चिमी मरुस्थलीय सीमावर्ती क्षेत्रों बाड़मेर, जैसलमेर, फलौदी आदि में मांगणियार जाति के लोगों द्वारा अपने यजमानों के यहाँ मांगलिक अवसरों पर गायी जाती है।
- मांगणियार गायिकी में मुख्यतः 6 राग एवं 36 रागनियाँ होती है ।
- इनके प्रमुख वाद्य कमायचा, खड़ताल आदि है।
- प्रमुख मांगणियार कलाकार -साकर खाँ मांगणियार (कमायचा वादक) साफर खाँ (ढोलक वादक), स्व. सद्दीक खाँ मांगणियार (प्रसिद्ध खड़ताल वादक) ।

(iii) लंगा गायिकी

- बीकानेर, बाड़मेर, फलौदी एवं जैसलमेर जिले के पश्चिमी क्षेत्रों में मांगणियारों की तरह मांगलिक अवसरों एवं उत्सवों पर लंगा जाति के गायकों द्वारा गायी जाने वाली गायन शैली 'लंगा गायिकी' कहलाती है।
- सारंगी व कमायचा इनके प्रमुख वाद्य है।
- राजपूत इनके यजमान होते है।
- प्रमुख लंगा कलाकार- फूसे खाँ, महरदीन लंगा, अल्लादीन लंगा, करीम खाँ लंगा ।

(iv) तालबंदी गायिकी

- राजस्थान के पूर्वी अंचल में लोक गायन की शास्त्रीय परम्परा है, जिसमें राग-रागनियों से निबद्ध प्राचीन कवियों की पदावलियाँ सामूहिक रूप से गायी जाती है, इसे ही'तालबंदी' गायिकी कहते है ।
- इसमें प्रमुख वाद्य सारंगी, हारमोनियम, ढोलक, तबला व झाँझ है एवं बीच-बीच में नगाड़ा भी बजाते है।

राजस्थान के प्रमुख संगीत ग्रंथ

❖ **संगीत राज**

- इसकी रचना मेवाड़ के महाराणा कुम्भा द्वारा 15 वीं सदी में की गई।
- ये पाँच कोषो पाठ्य, गीत, वाद्य, नृत्य और रस रत्नकोष आदि में विभक्त है। इसे'उल्लास कहा गहै।
- उल्लास को पुनः परीक्षण में बांटा गया है।
- इसमें ताल, राग, वाद्य, नृत्य, रस, स्वर आदि का विस्तार से वर्णन किया गया है।

❖ **राग मंजरी**

- इसकी रचना पुण्डरीक विठ्ठल ने की थी।
- ये जयपुर महाराजा मानसिंह के दरबारी थे।

राग मंजरी के लेखक हैं।

(a) महाराणा कुंभा **(b) पुण्डरीक विठ्ठल**
(c) महाराणा प्रताप (d) महाकवि पद्माकर

❖ **राग माला**

- इस ग्रंथ की रचना भी पुण्डरीक विठ्ठल ने की थी।
- इसमें राग रागिनी व शुद्ध स्वर-सप्तक का उल्लेख किया गया है।

❖ **शृंगार हार**

❖ रणथम्भौर के शासक हम्मीर देव ने इस ग्रंथ की रचना की थी।

❖ **राधागोविन्द संगीत सागर**

- इसकी रचना जयपुर के महाराजा सवाई प्रतापसिंह के द्वारा करवाई गई ।
- इस ग्रंथ के लेखन में इनके राजकवि देवर्षि बृजपाल भट्ट का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।
- इस ग्रंथ में बिलावल को शुद्ध स्वर सप्तक कहा गया है।

❖ **राग-रत्नाकर**

- जयपुर के उणीयारा ठिकाने के राव भीमसिंह के दरबार में रहकर राधा कृष्ण ने इस ग्रंथ की रचना की थी ।

❖ **राग कल्पद्रुम-** इस ग्रंथ की रचना मेवाड़ निवासी श्री कृष्णानन्द व्यास ने की थी।

❖ यह ग्रंथ संगीत के साथ-साथ हिंदी साहित्य के इतिहास के निर्माण के लिये भी उपयोगी माना जाता है।

राजस्थान के प्रमुख संगीतकार

❖ **सवाई प्रताप सिंह**

- जयपुर नरेश सवाई प्रताप सिंह संगीत एवं चित्रकला के प्रकांड विद्वान और आश्रयदाता थे।
- इन्होंने संगीत का विशाल सम्मेलन करवाकर संगीत के प्रसिद्ध ग्रंथ राधा गोविंद संगीत सार की रचना करवाई।
- इस ग्रंथ के लेखन में इनके राजकवि देवर्षि बृजपाल भट्ट का महत्वपूर्ण योगदान रहा।
- इनके दरबार में 22 प्रसिद्ध संगीतज्ञ एवं विद्वानों की मंडली को'गंधर्व बाईसी' कहा जाता था।

NOTE : – पाली की गवरी देवी भी प्रसिद्ध मांड गायकी हैं जो भैरवी युक्त मांड गायन में प्रसिद्ध हैं ।

शास्त्रीय संगीत पर रचना' राधा गोविन्द संगीत सार' के रचयिता थे

(a) देवर्षि ब्रजपाल भट्ट (b) हीरानंद व्यास
(c) देवर्षि भट्ट द्वारका नाथ (d) चतुर लाल सैन

❖ **पंडित उदय शंकर**

- उदयपुर में जन्मे श्री उदय शंकर प्रख्यात कथकली नर्तक थे।

❖ **पंडित रविशंकर**

- रविशंकर ने भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिक्षा उस्ताद अल्लाऊद्दीन खाँ से प्राप्त की।
- अपने भाई उदय शंकर के नृत्य दल के साथ भारत और भारत से बाहर समय गुजारने वाले रविशंकर ने 1938 से 1944 तक सितार का अध्ययन किया और फिर स्वतंत्र तौर से काम करने लगे।
- उन्होंने भारतीय संगीत को विदेशों तक लोकप्रिय बनाया है इन्हें अमेरिका का प्रसिद्ध संगीत पुरस्कार ग्रैमी पुरस्कार मिल चुका है।
- पं. रविशंकर विश्व प्रसिद्ध सितार वादक

❖ **पं.विश्वमोहन भट्ट**

- इनका जन्म 12 जुलाई, 1950 ई. जयपुर में हुआ था।
- इनके गुरु पं. रविशंकर थे।
- विश्वमोहन ने गिटार, सरोद, बीणा का समन्वय कर' मोहन वीणा' नामक नये वाद्य यंत्र का आविष्कार किया तथा' गौरीम्मा' नामक नई राग का सृजन किया।
- पं. विश्वमोहन भट्ट को में इनके म्यूजिकल एलबम' एमिटिंग बाई द रिवर' के लिए 1993 में ग्रेमी पुरस्कार, वर्ष 1998 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार व वर्ष 2002 में पद्मश्री सम्मान वर्ष 2017 में पद्मभूषण सम्मान से सम्मानित किया गया।
- इनके बड़े भ्राता पंडित शशि मोहन भट्ट भी प्रसिद्ध सितार वादक थे जिनका वर्ष 2001 में जयपुर में निधन हो गया।

❖ **गवरी देवी-** यह बीकानेर की थी।

- यह जोधपुर राजघराने में एक मांड गायिका थी ।
- महाराजा उम्मेद सिंह के समय गवरी देवी को सर्वाधिक प्रसिद्धि मिली । इन्हें राजस्थान की कोकिला कहते हैं।
- इन्हें' माड मल्लिका' भी कहते हैं।

❖ **बनो बेगम-** बन्नो बेगम शास्त्रीय गायन, माण्ड गायन, ठुमरी, गीत व गजल में निपुण थी ।

- बन्नो बेगम की माता जौहरबाई भी जयपुर दरबार में गायिका थीं ।
- बन्नो बेगम जयपुर गुणीजन खाना में शामिल थीं इनके गुरु नजीन खां थे।

❖ **मांगीबाई-** उनका जन्म प्रतापगढ़ में हुआ।

- मांगीबाई मांड व शास्त्रीय गायन में निपुण थी।

❖ **अल्लाह जिल्लाई बाई**

- इनका जन्म 1902 ई. बीकानेर में हुआ था ।
- महाराजा गंगासिंह ने इन्हें बचपन में ही गुणीजन खाना में प्रवेश करवा दिया।
- 2003 में अल्लाह जिल्लाई बाई पर 5 रुपये की डाक टिकट जारी हुई ।
- यह बीकानेर राजघराने में मांड गायिका थी ।
- अल्लाह जिल्लाई बाई को मरु कोकिला कहते हैं ।
- संगीत की शिक्षा उस्ताद हुसैन बक्स ने दी थी ।
- 1982 में उन्हें पद्म श्री का अवार्ड मिला ।
- केसरिया बालम, बाई सारा वीरा इनके प्रमुख गीत हैं।
- 3 नवम्बर, 1992 में बीकानेर में अल्लाह जिल्लाई बाई का निधन हुआ ।

❖ **अल्लादिया खां**

- इनका जन्म 1855 ई. में उणियारा (जयपुर) में हुआ था।
- अल्लादिया खाँ जयपुर संगीत घराने के प्रमुख संगीतकार थे।
- एम. आर. जयकर ने अल्लादिया खाँ को माऊण्ट एवरेस्ट ऑफ म्यूजिक तथा संगीत सम्राट की उपाधि दी ।

❖ **जहीरुद्दीन फैयाज उद्दीन डागर**

- प्रसिद्ध ध्रुपद गायक जिन्होंने द्रुपद में जुगलबंदी की परंपरा स्थापित की और द्रुपद को नया रूप दिया

❖ **अमीर खुसरो**

- इसका जन्म उत्तर प्रदेश में 1253 ईस्वी में हुआ था।
- खुसरो अलाउद्दीन खिलजी के दरबारी संगीतज्ञ थे।
- वह सूफ़ी रहस्यवादी थे और दिल्ली वाले निजामुद्दीन औलिया उन के आध्यात्मिक गुरू थे। उनकी मुख्य काव्य रचनायें तुहफा – तुस - सिग़र, वसतुल-हयात, गुर्रातुल - कमाल, नेहायतुल - कमाल आदि हैं।

❖ **राजा मानसिंह तोमर**

- ग्वालियर के शासक जो एक अच्छे विद्वान और संगीतज्ञ थे।
- उन्होंने बैजू बावरा के सहयोग से ध्रुपद गायन को परिष्कृत रूप प्रदान कर उसका सुधार किया।
- मानकोतूहल मानसिंह के दरबार में लिखा गया ग्रंथ है।
- इसका फारसी अनुवाद 1673'संगीत दर्पण' के नाम से फकीरउल्ला द्वारा किया गया।

➢ राज्य के प्रमुख लोकनृत्य को चार भागों में विभाजित किया गया है -

1. **जनजातीयों के नृत्य**
2. **व्यवसायिक लोकनृत्य**
3. **जातीय नृत्य**
4. **क्षेत्रिय नृत्य**

❖ **राजस्थान के क्षेत्रीय लोकनृत्य**

➢ **घूमर**

- 'घूमर' शब्द की उत्पत्ति'घुम्म' से हुई है, जिसका अर्थ होता है,'लहंगे का घेर' ।
- घूमर में महिलाएं घेरा बनाकर'घूमर लोकगीत' की धुन पर नाचती हैं ।
- घूमर के साथ आठ मात्रा के कहरवे की विशेष चाल होती है, जिसे सवाई कहते हैं ।
- घूमर नृत्य की उत्पति मध्य एशिया के भरंग नृत्य से मानी जाती है ।
- यह राजस्थान का राजकीय नृत्य है ।
- यह नृत्य मारवाड़ व मेवाड़ में राजघराने की महिलाओं द्वारा गणगौर पर किया जाता है ।
- राजस्थान की संस्कृति का पहचान चिह्न बन चुका'घुमर' नृत्य राजस्थान के'लोकनृत्यों की आत्मा' कहलाता है।
- इसे सिरमौर नृत्य व नृत्यों की आत्मा सामंतशाही नृत्य, रजवाड़ी नृत्य, महिलाओं का सर्वाधिक लोकप्रिय नृत्य कहते हैं।
- यह गरबा नृत्य की तरह किया जाता है ।
- घूमर- साधारण स्त्रियों द्वारा किया जाता है।
- झूमरिया- यह बालिकाओं द्वारा किया जाता है।

➢ **झूमर नृत्य**

- हाड़ौती क्षेत्र में स्त्रियों द्वारा मांगलिक अवसरों एवं त्यौहारों पर किया जाने वाला गोलाकार नृत्य जो डाण्डियों की सहायता से किया जाता है।

➢ **घुमरा नृत्य**

- इसे भील जनजाति की महिला करती है।
- यह गरबा जैसा होता है।
- यह मांगलिक अवसर पर किया जाता है।
- यह अर्द्ध वृताकार घेरे में महिलायें करती है।
- इस नृत्य में 2 दल होते हैं जिसमें एक दल गाता है तथा दूसरा नाचता है।

➢ **घूमर-घूमरा नृत्य**

- घूमर - घूमरा नृत्य राजस्थान का एकमात्र शोक सूचक नृत्य है। जो केवल वागड़ क्षेत्र के कुछ ब्राह्मण समुदाय में किया जाता है।

➢ **ढोल नृत्य**

- राजस्थान के जालौर क्षेत्र में शादी के अवसर पर पुरुषों के द्वारा सामूहिक नृत्य करते हुए विविध कलाबाजियाँ दिखाते हैं।
- इस नृत्य को प्रकाश में लाने का श्रेय जयनारायण व्यास को जाता है।
- यह नृत्य ढोली, सरगरा, माली, भील आदि जातियों द्वारा किया जाता है।
- इस नृत्य में कई ढोल एवं थालियाँ एक साथ बजाए जाते हैं। ढोलवादकों का मुखिया थाकना शैली' में ढोल बजाना प्रारम्भ करता है।

➢ **घुड़ला नृत्य**

- घुड़ला नृत्य विशेष रूप से जोधपुर जिले में किया जाता है ।
- घुड़ला नृत्य युवतियों के द्वारा किया जाता है ।
- घुड़ला नृत्य में स्त्रियाँ सुंदर शृंगार करके गोलाकार पथ पर नृत्य करती है ।
- घुड़ला नृत्य करते समय महिलाओं के सिर पर छिद्रित मटके रखे होते है । जिनमें जलता हुआ दीपक रखा जाता है । इस मटके को ही घुड़ला कहते हैं ।
- शीतला अष्टमी (चैत्र कृष्णा -8) पर घुडले का त्यौहार मनाया जाता है ।
- घुड़ला नृत्य को सर्वप्रथम मारवाड़ में घुड़ले खाँ की बेटी गिंदोली ने गणगौर उत्सव के समय शुरू किया था ।
- यह नृत्य दिन में नहीं अपितु रात्रि में किया जाता है ।
- इसमें चाल मंद व मादक होती है व घुड़ले को नाजुकता से संभाला जाता है, जो दर्शनीय है ।
- **घुड़ला नृत्य से एक कथा जुड़ी हुई है**- एक बार मारवाड़ के पीपाड़ा नामक स्थान पर स्त्रियाँ तालाब पर गौरी पूजन कर रही थी तभी अजमेर का सूबेदार मल्लू खाँ 140 कन्याओं का हरण करके ले जाता है । जोधपुर नरेश सातल देव ने इनका पीछा किया । इनका भयंकर युद्ध हुआ, जिसमें मल्लू खाँ के

❖ राजस्थान की प्रमुख प्रथाएं

➢ **सती प्रथा**

- पति की मृत्यु पर पत्नी द्वारा पति की चिता के साथ जलकर मौत का वरण करना ही 'सती प्रथा' कहलाता हैं ।
- इस प्रथा को सहगमन/सहमरणा/अणवारोहण के नाम से भी जाना जाता हैं ।
- राज्य में सर्वप्रथम सती होने का प्रमाण वि.सं. 861 ई. के घटियाला शिलालेख (जोधपुर) से मिलते हैं, जबकि राज्य में सन् 1987 में सती प्रथा की अंतिम घटना दिवराला गांव (सीकर) को मानी जाती हैं । इस घटना के बाद राजस्थान सरकार ने सती निवारण अधिनियम पारित किया ।
- आजादी से पहले राज्य में 1822 ई. में सर्वप्रथम सती प्रथा पर बूंदी रियासत में विष्णुसिंह ने सती प्रथा को गैर कानूनी घोषित किया गया ।
- बाद में राजा राममोहनराय के प्रयासों से लॉर्ड विलियम बैंटिक ने सन् 1829 में सती प्रथा को रोकने के लिए सरकारी आदेश जारी किया था ।
- इस आदेश के बाद अलवर रियासत ने सर्वप्रथम सती प्रथा पर रोक लगाई थी ।
- भारत के शासक मुहम्मद तुगलक व अकबर ने भी सती प्रथा पर रोक लगाने के प्रयास किए थे ।
- राज्य में सबसे प्रसिद्ध सती प्रथा की घटना 1652 ई. में हुई। इसमें झुंझुनू के तन धन दास की पत्नी नारायणी देवी सती हुई थी।
- नारायणी देवी को रानी सती या सती दादी के नाम से भी जाना जाता हैं ।
- इस परिवार की कुल 13 महिलाएं सती हुई थी ।

➢ **अनुमरण प्रथा**

- पति के शव के साथ सती न होकर उसके किसी चिन्ह (वस्तु) के साथ सती होना ही 'अनुमरण' कहलाता हैं ।
- ऐसी 'सती' को महासती कहते हैं ।
- मारवाड़ के राजा राव मालदेव की पत्नी उमादे जो कि जैसलमेर के राजा लूणकरण की पुत्री थी । यह उमादे भी मालदेव की पत्नी के साथ सती हुई थी ।

➢ **अणख प्रथा**- सती होने वाली महिला अपने परिवार के सदस्यों को कुछ उपदेश दिया करती थी, जिसे ही अणख प्रथा कहा जाता था।

➢ **जौहर प्रथा**- युद्ध में जीत की आशा ना देखकर राजपूत महिलाएं अपने स्त्रीत्व की रक्षा हेतु अग्नि या जल में कूदकर अपनी जान दे देती थी, इसे ही जौहर प्रथा कहते हैं ।

➢ **केसरिया प्रथा**

- राजपूत योद्धा केसरिया वस्त्र पहनकर युद्ध करते हुए, वीरगति को प्राप्त हो जाते थे, इसे ही केसरिया करना कहते हैं ।

➢ **साका**- यदि जौहर और केसरिया किसी युद्ध के समय दोनों होते हैं, तो इसे साका कहते हैं ।

➢ **डावरिया प्रथा**- राजाओं की लड़की की शादी में उनके साथ दहेज के रूप में अन्य कुंवारी कन्याएं दी जाती थी, जिसे 'डावरिया' कहा जाता था ।

➢ **नाता प्रथा**- पुनर्विवाह को ही नाता प्रथा कहते हैं ।

➢ **कन्यावध**

- कन्या को जन्म लेते ही उसे अफीम देकर या गला दबाकर मार दिया जाता था, इसे ही कन्या वध कहते हैं ।
- ये प्रथा विशेषकर मारवाड़ के राजपूतों में प्रचलित थी ।
- कन्या वध में सर्वप्रथम रोक 1833 ई. में कोटा रियासत ने लगाया ।
- बाद में बूंदी में कन्या वध करने को गैर कानूनी घोषित कर दिया था ।

➢ **डाकन प्रथा**- राजस्थान में विशेषकर जनजातियों में स्त्री पर डाकन होने का आरोप लगाकर उसे मार डालने की प्रथा थी।

- महाराणा स्वरूपसिंह के समय में में बाड़ भील कार के कमाण्डेंट जे.सी. ब्रुरक ने अप्रैल 1853 में इस प्रथा को गैर-कानूनी घोषित किया।

➢ **समाधी प्रथा**- मृत्यु को जीते जी धारण कर लेना (समाधी) प्रथा कहलाती हैं।

- जयपुर के राजा रामसिंह द्वितीय के समय 1845 ई. में सर्वप्रथम इस प्रथा पर रोक लगाई गई ।

➢ **संथारा प्रथा**

- इस प्रथा का वर्णन जैन ग्रंथों में मिलता हैं । इसमें अन्न, जल को त्यागकर समत्व भाव से देह का त्याग किया जाता हैं ।

➢ **बाल-विवाह प्रथा**

- बालक व बालिका को छोटी उम्र में ही विवाह कर देना बाल-विवाह कहलाता हैं। अजमेर के समाजसेवी हरविलास शारदा के प्रयासों से 1929 ई. में शारदा एक्ट बनाया गया।

➢ **पर्दा प्रथा**

- मुस्लिम आक्रमणकारियों के आने के बाद राजस्थान की औरतों में पर्दा प्रथा का प्रचलन शुरू हुआ था ।

➢ **दास प्रथा**

- दास ऐसे व्यक्ति होते थे, जो युद्ध में पराजित होने पर बंदी बना लिए जाते थे ।
- इन दासों का क्रय-विक्रय भी किया जाता था ।
- इस प्रथा पर राज्य में सर्वप्रथम रोक 1832 ई. में कोटा रियासत ने लगाई थी ।

➢ **बेगार प्रथा**

- वह काम जिसके बदले में मेहनताना प्राप्त न हो 'बेगार' कहलाती हैं ।
- एकीकरण के बाद बंधित श्रम पद्धति अधिनियम, 1976 द्वारा इस प्रथा पर रोक लगाई गई थी।

अध्याय – 7

लोक देवियाँ एवं लोक देवता

❖ लोक देवियाँ

चरजा - चारण देवियों की स्तुति चरजा कहलाती है। जो दो प्रकार की होती हैं।
1. सिधाऊ - शांति/सुख के समय उपासना
2. घाडाऊ - विपत्ति के समय उपासना

➢ करणी माता

- करणी माता चारणों की कुलदेवी एवं बीकानेर के राठौड़ों की इष्ट देवी हैं।
- 'चूहों वाली देवी' के नाम से विख्यात हैं।
- जन्म सुआप गाँव (फलौदी) के चारण परिवार में हुआ था।
- इनके बचपन का नाम रिद्धु बाई था।
- करणी माता का मंदिर को मठ कहलता हैं।
- मंदिर - देशनोक (बीकानेर)।
- करणी माता के मंदिर में पाए जाने वाले सफेद चूहों को **काबा** कहा जाता हैं।
- यहाँ सफेद चूहे के दर्शन करण जी के दर्शन माने जाते हैं।
- राव जोधा के समय मेहरानगढ़ दुर्ग की नींव करणी माता ने रखी।
- करणी माता की गायों का ग्वाला-दशरथ मेघवाल था।
- राव कान्हा ने इनकी गायों पर हमला किया ।
- महाराजा गंगासिंह ने इस मंदिर के लिए चांदी के किवाड़ भेंट किया ।
- करणी जी की इष्ट देवी'तेमड़ा माता' हैं। करणी जी के मंदिर के पास तेमड़ाराय देवी का भी मंदिर हैं ।
- सफेदचील को करणी माता का रूप माना जाता हैं ।
- करणी जी के मठ के पुजारी चारण जाति के होते हैं।
- चैत्र एवं आश्विन माहकी नवरात्रि में मेला भरता हैं ।
- देशनोक बीकानेर में करणी माता के मंदिर की नींव स्वयं करणी माता ने रखी थी।
- करणी माता के इस मंदिर में दो कढ़ाई स्थित हैं, जिनके नाम - "**सावन-भादो कड़ाइयाँ**" हैं।

➢ जीण माता

- चौहान वंश की आराध्य देवी ।
- ये धंधराय की पुत्री एवं हर्ष की बहन थी।

- मंदिर में इनकी अष्टभुजी प्रतिमा हैं।
- इनके इस मंदिर का निर्माण पृथ्वीराज चौहान प्रथम के समय राजा हट्टड़ द्वारा करवाया गया।
- जीणमाता की अष्टभुजा प्रतिमा एक बार में ढ़ाई प्याला मदिरा पान करती हैं ।
- इन्हें प्रतिदिन ढाई प्याला शराब पिलाई जाती हैं ।
- जीणमाता का मेला प्रतिवर्ष चैत्र और आश्विन माह के नवरात्रों में लगता हैं।
- जीणमाता तांत्रिक शक्तिपीठ हैं । इसकी अष्टभुजी प्रतिमा के सामने घी एवं तेल की दो अखण्ड ज्योति सदैव प्रज्वलित रहती हैं ।
- जीणमाता का गीत राजस्थानी लोक साहित्य में सबसे लम्बा हैं।
- जीणमाता का अन्य नाम भ्रामरी देवी हैं ।
- जीण माता को शेखावटी क्षेत्र की लोक देवी व मधुमक्खियों की देवी के नाम से जाना जाता हैं।
- यहाँ अब केवल बकरे के कान चढ़ाते हैं।

राजस्थान के लोक साहित्य में किस देवी - देवता का गीत सबसे लम्बा हैं ?

(a) जीणमाता (b) गोगाजी
(c) आईमाता (d) मल्लीनाथ जी

➢ कैला देवी

- करौली के यदुवंश (यादववंश) की कुल देवी ।
- इनकी आराधना में लागुरिया गीत गाये जाते हैं ।
- कैला देवी का लक्खी मेला प्रतिवर्ष चैत्र मास की शुक्ला अष्टमी को भरता हैं।

- कैला देवी मंदिर के सामने बोहरा की छतरी है।
- कैला देवी को माँस का भोग नहीं लगता ।
- इनका मंदिर 19वीं शताब्दी में गोपाल सिंह द्वारा कालीसिल नदी के मुहाने पर त्रिकुट पहाडी पर बनवाया गया।
- यहाँ घुटकन नृत्य प्रसिद्ध है जिसे गुर्जर व मीणा जाति के लोग करते हैं।

➢ **शिला देवी**

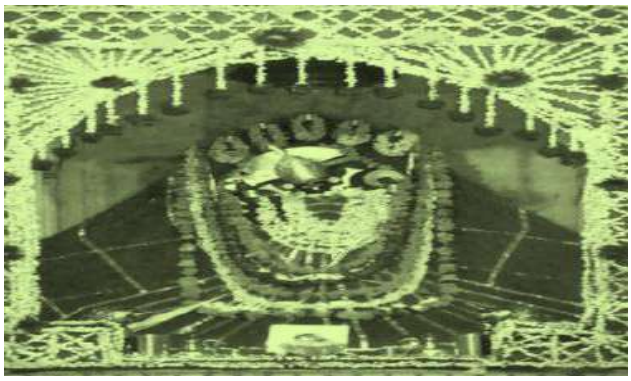

- जयपुर के कछवाहा वंश की आराध्यदेवी / कुलदेवी ।
- इनका मंदिर आमेर दुर्ग में है ।
- शिलामाता की यह मूर्ति पाल शैली में काले संगमरमर में निर्मित है ।
- आमेर के महाराजा मानसिंह प्रथम द्वारा पूर्वी बंगाल के राजा केदार को पराजित कर 'जस्सोर' नामक स्थान से अष्टभुजी भगवती की मूर्ति 16वीं शताब्दी में आमेर लाए थे।
- आमेर लाकर उन्होंने आमेर दुर्ग में स्थित जलेब चौक के दक्षिणी-पश्चिमी कोने में मंदिर बनवाया था
- मान्यता है कि इस देवी की जहाँ पूजा होती है उसे कोई नहीं जीत सका ।
- शिला देवी को ढाई प्याला शराब चढती है तथा भक्तों को शराब व जल का चरणामृत दिया जाता है।

➢ **जमुवायमाता**

- ढूँढाड़ के कछवाहा राजवंश की कुलदेवी ।
- इनका मंदिर जमुवा रामगढ़, जयपुर में है।
- इस मंदिर का निर्माण कछवाहा वंश के दुलहराय द्वारा मंदिर का निर्माण करवाया गया।

➢ **आई माता**

- आई माता के बचपन का नाम - जीजीबाई
- जन्म - अम्बाकुर (गुजरात)
- सिरवी जाति के क्षत्रियों की कुलदेवी है ।
- इनका मंदिर बिलाड़ा गाँव (जोधपुर) में है।

- इनके मंदिर को 'दरगाह' व थान को 'बड़ेर' कहा जाता है।
- ये रामदेवजी की शिष्या थी।
- इन्हें माजी देवी (नवदुर्गा) का अवतार माना जाता है।
- इनके मन्दिर में मूर्ति नहीं होती तथा जलने वाले दीपक की ज्योति से केसर टपकती रहती है । इनके मन्दिर का पूजारी दीवान कहलाता है ।

➢ **राणी सती**

- सती माता - अग्रवालों की कुल देवी
- पति - तन-धन-दास
- विश्व का सबसे बड़ा सती माता का मंदिर झुंझुनू में तथा दूसरा बड़ा मंदिर खेमीसती झुंझुनू में ही है।
- वास्तविक नाम 'नारायणी'।
- 'दादीजी' के नाम से लोक प्रिय।
- झुंझुनू में हर वर्ष भाद्रपद अमावस्या को मेला भरता है ।
- इन्होंने हिसार में मुस्लिम सैनिकों को मारकर अपने पति की मृत्यु का बदला लिया और स्वयं सती हो गयी ।
- राज्य सरकार ने 1988 में इस मेले पर प्रतिबंध लगा दिया क्योंकि 1987 में देवराला (श्रीमाधोपुर, सीकर) में "रूपकंवर" नामक राजपूत महिला सती हो गयी थी।

➢ **आवड़ माता**

❖ जालौर का किला

- इस दुर्ग का निर्माण प्रतिहार शासक नागभट्ट प्रथम ने 8वीं सदी में सूकड़ी नदी के किनारे करवाया (दशरथ शर्मा के अनुसार) था।
- हीराचंद ओझा के अनुसार इस दुर्ग का निर्माण 10वीं सदी में धारावर्ष परमार ने करवाया।
- यह दुर्ग कनकाचल / सोनगिरी पहाड़ी पर स्थित है।
- इस दुर्ग को सुवर्ण गिरी, कंचनगिरी, जाबालीपुर (जाबाली ऋषि की तपोभूमि होने के कारण) कहते हैं।
- कीर्तिपाल चौहान ने 1144 ई. में परमारों से यह दुर्ग छीना था।
- वर्ष 1311ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने इस दुर्ग पर आक्रमण किया । इस समय यहाँ का शासक कान्हडदेव चौहान था। बीका दहिया के विश्वासघात के कारण दुर्ग के गुप्त रास्ते की जानकारी अलाउद्दीन खिलजी को लगी। गुप्त रास्ते की खोज के लिए राई का प्रयोग किया गया इस कारण जालौर के बाजार में रात को उच्च दामों पर राई खरीदी गई जिस कारण इस दुर्ग के बारे में एक कहावत प्रचलित है – राई रा भाव राते ही गिय्या।
- इसके बाद हुए युद्ध में कान्हड़देव चौहान के नेतृत्व में केसरिया तथा जैतलदे के नेतृत्व में जौहर हुआ। इस प्रकार जालौर का प्रथम साका हुआ तथा अलाउद्दीन ने जालौर का नाम जलालाबाद कर दिया।
- खिलजी ने दुर्ग में परमार राजा भोज द्वारा निर्मित संस्कृत पाठशाला को तोड़कर एक मस्जिद का निर्माण करवाया जिसे अलाउद्दीन को मस्जिद या तोप मस्जिद कहते हैं।
- वत्सराज के दरबारी विद्वान उद्योतन सूरि ने इस दुर्ग में कुवलयमाला ग्रन्थ की रचना की।
- इस दुर्ग में मल्लिक शाह पीर की दरगाह, चामुण्डा माता मन्दिर, झालरबावड़ी, सोहनबावड़ी, परमार कालीन कीर्तिस्तम्भ, दहिया की पाल, सुन्धा शिलालेख, जालन्धरनाथ की गुफा व छतरी, बीरमदेव चौकी, जोगमाया मन्दिर, दो मंजिला रानी महल स्थित हैं।
- इस दुर्ग के सामने नटनी की छतरी स्थित है।

NOTE : - नटनी का चबूतरा पिछोला झील में स्थित है।

- जालौर दुर्ग के लिए हसन निजामी ने कहा है, कि यह एक ऐसा किला है, जिसका दरवाजा कोई भी आक्रमणकारी खोल नहीं सका।

❖ सिवाणा का किला

- बालोतरा जिले में स्थित (हलेश्वर पहाड़ी पर) भोज के पुत्र वीरनारायण पंवार ने इसका निर्माण 954 ई. करवाया था।
- कूमट झाड़ी की अधिकता के कारण इसे 'कूमट दुर्ग' भी कहते हैं।
- इसका प्राचीन नाम कुम्बाना था।
- इसे मारवाड़ शासकों की संकटकालीन आश्रयस्थली कहते हैं। (राव चन्द्रसेन एवं मालदेव ने शरण ली थी)
- जालौर दुर्ग को जीतने से पहले इस दुर्ग को जीतना अनिवार्य था जिस कारण इसे जालौर दुर्ग की कुंजी कहते हैं ।
- इसी दुर्ग में प्रजामंडल आंदोलनों के दौरान 'शेर-ए-राजस्थान' जयनारायण व्यास को बंदी बनाकर रखा गया था।
- वर्ष 1308 ई. में इस दुर्ग पर अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति कमालुद्दीन कुर्ग ने आक्रमण किया। इस समय दुर्ग कान्हडदेव चौहान के भतीजे शीतलदेव चौहान ने केसरिया तथा उसकी रानी मैणादे ने जौहर किया जोकि इस दुर्ग का प्रथम साका था। भावला पंवार ने दुर्ग में स्थित पेयजल में गाय का रक्त मिलाकर अपवित्र कर शीतलदेव चौहान के साथ विश्वासघात किया ।
- खिलजी ने सिवाणा का नाम खैराबाद कर दिया।
- वर्ष 1582 ई. में यहाँ का शासक कल्याणमल (इस योद्धा की साहसिक गाथा पृथ्वीराज राठौड़ ने 'कल्ला रायमल्लोत की कुंडलिया' में लिखी है) था जिस पर जोधपुर के मोटाराजा उदयसिंह ने अकबर के कहने पर आक्रमण किया जिससे सिवाणा का दूसरा साका हुआ। इस युद्ध में कल्याणमल वीरगति को प्राप्त हुआ तथा उसकी पत्नी हाड़ी रानी ने दुर्ग में ललनाओं के साथ जौहर का अनुष्ठान कर लिया। कहा जाता है कि कल्याणमल का सिर कटने के बाद भी लड़ते रहे। इस दुर्ग में राजा कल्याणमल की दो समाधियां हैं। एक समाधि कल्याणसिंह के सिर की है तो दूसरी समाधि कल्याणसिंह के धड़ की है।

❖ **आमेर का किला (जयपुर)**

- इस दुर्ग का निर्माण मीणाओं ने किया।
- यह दुर्ग कालीखोह पहाड़ी पर स्थित है।
- 1207 ई. में दुल्हेराय (तेजकरण) के पुत्र कोकिलदेव ने मीणाओं से छीनकर इस पर अधिकार कर लिया।
- विशप हैबर का कथन-''मैंने क्रेमलिन में जो कुछ देखा और अलब्रह्मा के बारे में जो कुछ सुना उससे बढ़कर भी इस दुर्ग के महल हैं।''
- इस दुर्ग में पाँच द्वार हैं
- भारमल ने इसका पुनः निर्माण तथा मानसिंह प्रथम 1592 ई. ने इसे आधुनिक रूप दिया।
- **इस दुर्ग में स्थित प्रमुख दर्शनीय स्थल-**
- इस दुर्ग में जलेब चौक, सिंह पोल, गणेश पोल, दीवान - ए- आम, दीवान- ए-खास, दिलखुश महल, बाला बाई की साल, मावठा तालाब, सुख मन्दिर, सुहाग मन्दिर, चतरनाथ जोगी के स्मारक, सीतारामजी का मन्दिर, शिलामाता मन्दिर, जनानी ड्योढ़ी, बुखारा गार्डन, मीना बाजार, केशर क्यारी, भूलभूलैया, अम्बीकेश्वर महादेव मंदिर, मानसिंह महल, कदमी महल (आमेर का दुर्ग का सबसे पुराना महल कदमी महल है जिसका निर्माण 1237 ई. मे राजदेव ने करवाया। इन महलों में मीणाओं द्वारा कच्छवाहों का राजतिलक होता है)
- इसमें कछवाह वंश का राजतिलक होता था) आदि दर्शनीय स्थल हैं।
- यह दुर्ग जयगढ़ दुर्ग से सुरंग से जुड़ा है। इस दुर्ग में सर्वाधिक विदेशी पर्यटक आते हैं।
- दिवान - ए - खास महल का निर्माण मिर्जा राजा जयसिंह ने करवाया इस महल पर कांच का काम किया है। जिस कारण इसे शीशमहल भी कहते हैं।

❖ **जयगढ़ का किला (जयपुर)**

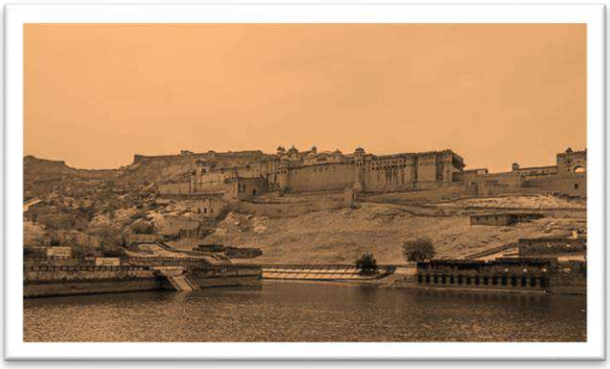

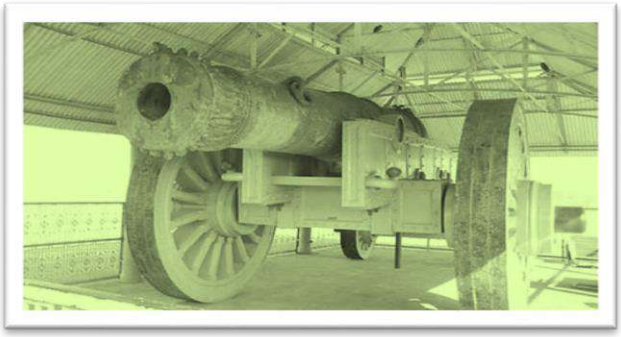

- इस दुर्ग का निर्माण मानसिंह ने शुरू करवाया तथा पूर्ण सवाई जयसिंह ने करवाया।
- यह दुर्ग चिल्ह / ईगल पहाड़ी पर स्थित है।
- इस दुर्ग में प्रवेश के तीन मार्ग हैं 1. डूंगरपोल 2. भैरवपोल 3. अवनी पोल
- दुर्ग में राम, हरिहर व काल भैरव के प्राचीन मन्दिर हैं।
- इसे रहस्यमयी दुर्ग, संकटमोचन दुर्ग भी कहते हैं।
- यह टांकों व सुरंगों हेतु प्रसिद्ध है। यहाँ राजस्थान का सबसे बड़ा टांका स्थित है। यह दुर्ग आमेर दुर्ग से एक सुरंग से जुड़ा है। इस दुर्ग में विजयगढ़ी महल है जिसे लघु दुर्ग कहते हैं जिसमें सवाई जयसिंह ने अपने भाई विजय सिंह को कैद किया। इसी विजयगढ़ी में आमेर शासकों का शस्त्रागार, खजाना व तोप बनाने का कारखाना था जो एशिया का एकमात्र तोपखाना था।
- विजयगढी के पास एक सात मंजिला प्रकाश स्तम्भ है जो' दीया बुर्ज' कहलाता है।
- इंदिरा गाँधी ने गुप्त खजाने की खोज के लिये इस दुर्ग में वर्ष 1975-1976 में खुदाई करवाई थी।
- यहाँ एशिया की सबसे बड़ी तोप जयबाण तोप रखी है जिसे एक ही बार चलाया गया। इसका गोला चाकसू में गिरा जहाँ गोलेलाव तालाब बन गया। इस तोप की मारक क्षमता 35 किमी, वजन 50 टन, लम्बाई 20 फीट, नली का व्यास करीब 11 इंच व गोले का वजन 50 किलोग्राम था।
- इस दुर्ग में एक कठपुतली घर व चारबाग शैली का उद्यान स्थित है। इस दुर्ग में लक्ष्मी निवास, विलास मंदिर, आराम मंदिर, राणावतजी का चौक, सुभट निवास (दीवान-ए-आम), खिलवत निवास (दीवान-ए- खास) स्थित है।

❖ **नाहरगढ़ का किला (जयपुर)**